श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के अधीन एक राष्ट्रीय महत्व का संस्थान

चित्रलेखा

जनवरी-जून २०२५

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना ब्लॉक

चित्रलेखा

मुख्य संरक्षक
डॉ. संजय बिहारी, निदेशक
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

संपादक
डॉ. कमलेश के. गुलिया, वैज्ञानिक जी
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

संपादकीय
डॉ. संतोष कुमार बी, कुलसचिव
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

फोटोग्राफी
श्री लिजिकुमार जी. वैज्ञानिक अधिकारी, चिकित्सा चित्रण
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

रूपांकन
डॉ. डिंपल गोपी, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं दस्तावेज़ीकरण अधिकारी
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम

हमारे संस्थान के बारे में

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान त्रिवेंद्रम, भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्थान है, जिसे वर्ष 1980 में संसद के अधिनियम द्वारा "राष्ट्रीय महत्व का संस्थान" घोषित किया गया। यह संस्थान चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनूठे संगम का उदाहरण है, जिसका मुख्य उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना, चिकित्सा उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का स्वदेशी विकास करना तथा जनस्वास्थ्य और चिकित्सा अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। संस्थान के तीन प्रमुख अंग हैं – अस्पताल शाखा, जो हृदय, छाती और तंत्रिका रोगों के उन्नत उपचार और शल्यक्रिया में विशेषज्ञता रखती है; बायोमेडिकल प्रौद्योगिकी शाखा, जो चिकित्सा उपकरणों, बायोमैटेरियल्स और विभिन्न इम्प्लांट्स के विकास एवं परीक्षण में अग्रणी है; तथा अच्युत मेनन स्वास्थ्य विज्ञान अध्ययन केंद्र, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान और शिक्षा में योगदान देता है। यह संस्थान जटिल न्यूरोसर्जरी, एपिलेप्सी सर्जरी, डीप ब्रेन स्टिमुलेशन, कार्डियक इलेक्ट्रोफिजियोलॉजी जैसी उन्नत चिकित्सा तकनीकों के लिए विश्व स्तर पर पहचाना जाता है। साथ ही, यह जैव-संगतता परीक्षण, चिकित्सा उपकरण मानकीकरण और औद्योगिक सहयोग के माध्यम से भारत को स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कार्यरत है। इस प्रकार एस.सीटीआईएमएसटी एक ऐसा संस्थान है जो चिकित्सा उपचार, शिक्षा, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास – इन चारों क्षेत्रों में उत्कृष्टता का प्रतीक है।

हमारे निदेशक का संदेश

महोदय/ महोदया,

हिंदी पत्रिका "चित्रलेखा" के प्रकाशन के लिए तैयार होने की खबर सुनकर बहुत खुशी हुई। यह मात्र एक पत्रिका नहीं है, बल्कि श्री चित्रा तिरुनाल परिवार द्वारा हिंदी भाषा को दिए जाने वाले महत्त्व को प्रदर्शित करने वाला एक महान प्रयास है। में पत्रिका की शानदार सफलता और हिंदी के प्रति प्रेम को बढ़ावा देने की उसकी यात्रा के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। में उन समर्पित छात्रो और कर्मचारियों की भी सराहना करता हूँ, जिनके अमूल्य योगदान ने इस सुन्दर दृष्टिकोण को साकार किया।

आशा हैं की चित्रलेखा सभी को प्रेरित करेगी और आने वाले वर्षो में खूब फले फूलेगी।

आपका विश्वासी

संकायाध्यक्ष की कलम से

महोदय/महोदया,

रुके न तू, थके न तू

मुझे अपने संस्थान के प्रकाशन **'चित्रलेखा'** के इस सीज़न के अंक को साझा करते हुए बहुत खुशी हो रही है। यह एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे संस्थान के रचनात्मक दिमागों की उपलब्धि है, जिसमें हमारे प्यारे छात्र और सम्मानित संकाय सदस्य शामिल हैं। यह साहित्य और संस्कृति में योगदान देने के लिए सदस्यों की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हम हिंदुस्तान में हिंदी को अपने दैनिक जीवन और विरासत का अभिन्न अंग मानने पर गर्व करते हैं।

चित्रलेखा सदस्यों को रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच के साथ छिपी प्रतिभाओं को बाहर लाने के लिए प्रोत्साहित करती है। मैं इस प्रयास को सफल बनाने वाले सभी योगदानकर्ताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। यह इस बात का प्रमाण है कि हम साहित्य और ज्ञान में अपना योगदान जारी रखेंगे। मैं सभी से अपने विचारों को पोषित करने और व्यक्त करने की कामना करता हूँ जिससे यह पत्रिका एक बड़ी सफलता बन सके।

जय हिंद

प्रमुख, बी.एम.टी. स्कंध का मंगल संदेश

मुझे इस चित्रलेखा पत्रिका के प्रकाशन के लिए कर्मचारियों और छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका कर्मचारियों और समर्पित छात्रों की कड़ी मेहनत, रचनात्मकता और प्रतिभा को दर्शाती है।

यह पत्रिका आपकी क्षमताओं का प्रमाण है और मुझे विश्वास है कि आप सभी अपने-अपने अनूठे तरीके से समाज में सकारात्मक योगदान देते रहेंगे। इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मचारियों और छात्रों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

आप सभी के आगामी प्रयासों में निरंतर सफलता और सहयोग की कामना करता हूँ।

उप निदेशक की कलम से

श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी विकास, रोगी देखभाल सेवाओं और गैर-संचारी रोगों के जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण की विभिन्न गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जिन्हें हमारे देश में एक बड़ा बोझ माना जाता है। यह वर्ष संस्थान के लिए बहुत ही उत्पादक रहा है, जिसमें कर्मचारियों और छात्र समुदाय की विभिन्न उपलब्धियाँ रहीं। हमारे जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकी उत्पादों का हाल ही में नई दिल्ली में एससीटीआईएमएसटी के संकाय और औद्योगिक साझेदारों द्वारा प्रदर्शन किया गया और माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान अध्ययन मंत्री श्री जितेंद्र सिंह, डीएसटी सचिव प्रो. अभय करंदीकर तथा अन्य अधिकारियों ने इसकी सराहना की।

एससीटीआईएमएसटी ने 2025 का हिंदी पखवाड़ा मनाया और हिंदी निबंध, प्रश्नोत्तरी, स्लोगन, टिप्पण एवं प्रारूपण, हस्तलेखन आदि क्षेत्रों में कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। संस्थान के कई सदस्यों ने भाग लिया और उन्हें पुरस्कार प्रदान किए गए। यह जानकर अत्यंत गर्व हो रहा है कि एससीटीआईएमएसटी राजभाषा नीति के मानदंडों के अनुसार प्रशासन, अन्य आधिकारिक क्षेत्रों, आयोजित समारोहों आदि सहित विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा के प्रयोग में अत्यंत सक्रिय है।

मुझे विश्वास है कि आने वाले वर्षों में हमारा संस्थान और भी कई उपलब्धियाँ हासिल करेगा।

कुलसचिव की कलम से

मुझे हमारी शानदार हिंदी मैगज़ीन, 'चित्रलेखा' और इसके खास रीडर्स को दिल से शुभकामनाएं देते हुए बहुत खुशी हो रही है। हर एडिशन में, मैगज़ीन हिंदी भाषा, कल्चर, की गई गतिविधियाँ और सोच की प्रचुरता का जश्न मनाती है— काम के नज़रिए, प्रेरणादायक कहानियाँ और हमारी जड़ों से एक मज़बूत कनेक्शन देती है।

संस्था के अंदर चित्रलेखा भाषा पर गर्व को बढ़ाने, छात्रों और कर्मचारियों के बीच रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने और कैंपस में सांस्कृतिक समझ को मज़बूत करने में एक ज़रूरी रोल निभाती है।

यह प्रकाशन लोगों को रोशनी देने, आवाज़ों को ऊपर उठाने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के अपने मिशन में आगे बढ़ता रहे।

आगे एक उज्ज्वल और प्रभावशाली भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं!

संपादक की कलम से

मुझे संस्थान की हिंदी पत्रिका चित्रलेखा वर्ष २०२५ के पहले अंक की प्रकाशन प्रस्तुति करने में अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम, समस्त चित्रा परिवार तहे दिल से हमारे संस्थापक निदेशक, प्रोफेसर एम् एस वलियाथन को श्रद्धांजलि देते हुए और उनको आत्मीयता से याद करते हुए उनके द्वारा दिखाए राह पर चलकर संस्थान को ओर नयी उच्चाईयों पर ले जाने का संकल्प करते है।

इस नए अंक में संस्थान में आयोजित किये गए महत्वपूर्ण कार्यकर्मो और समारोहों का वर्णन हमारे प्रगतिशील प्रयत्नों को धरातल पर दर्शाता है। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना ब्लॉक का माननीय केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह (राज्यमंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग) के कर कमलो द्वारा उद्घाटन, केंद्र और राज्य के प्रतिष्ठित नेताओं की उपस्थिति में, श्री चित्रा के इतिहास में एक नए स्वर्णिम अध्याय को जोड़ने वाला गौरवशाली पल बन गया है। अब अधिक से अधिक रोगी यहां इस उन्नत और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले सकेंगे। ४१ वार्षिक दीक्षांत समारोह और जी पार्थसारथी व्याख्यान का सफलतापूर्ण आयोजन हमें गौरव की अनमोल अनुभूति देता है। राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में संस्थान कर्मियों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवसों, कार्यशालाओं, खेलों एवं सम्मेलनों का आयोजन अनेक विभागों द्वारा अत्यंत जोश के साथ किया गया। चित्रा संस्थान के सदस्यों द्वारा कलात्मक रेखाचित्र, कैमरा फोटोग्राफी, कविताएँ और सामाजिक मुद्दों पर लेखन अति सराहनीय रहा।

एक वक़्त में सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत अब फिर एक बार अपने विज्ञान, अनुसंधान ओर तकनीकी नवाचारण द्वारा स्वर्णिम युग की ओर तेजी से बढ़ रहा है जिसमे चित्रा संस्थान का योगदान अभूतपूर्व रहेगा। प्रत्येक जनमानस को हिंदी भाषा और सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर विकसित भारत २०४७ के लक्ष्य को प्राप्त में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तत्पर रहना पड़ेगा।

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

- श्री चित्रा परिवार की श्रद्धांजलि: डॉ. एम. एस. वलियाथन 1
- गणतंत्र दिवस समारोह 5
- प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) ब्लॉक – श्री चित्रा तिरुनाल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान का नया अध्याय 6
- संस्थान दिवस एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह 11
- गणमान्य व्यक्तियों का नए पीएमएसएसवाई भवन का दौरा 13
- एससीटीआईएमएसटी का 41वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह 15
- जी. पार्थसारथी व्याख्यान 2025: मस्तिष्क और मशीन के संगम की दिशा में एक प्रेरक पहल 20
- दक्षिण भारत राजभाषा क्षेत्रीय वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक सम्मेलन, बेंगलुरु 22
- राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती समारोह रिपोर्ट, भारत मंडपम, नई दिल्ली 23
- राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में भागीदारी पर रिपोर्ट, हैदराबाद 24
- बैक टू बेसिक्स २०२५: हृदय हस्तक्षेपों पर सिम्युलेटर आधारित लघु पाठ्यक्रम 26
- केयरगिवर लाउंज (देखभालकर्ता विश्रांतिका) का उद्घाटन, 6 फरवरी 2025 27
- भारत-अमेरिका फ्लो साइटोमेट्री कार्यशाला 28
- अंतरिक्ष चिकित्सा में सहयोग पर रूपरेखा समझौता ज्ञापन 30
- विश्व निद्रा दिवस समारोह 2025 32
- मई दिवस खेल 35
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 37
- विश्व सामाजिक कार्य दिवस 2025 39
- विश्व हाथ स्वच्छता दिवस 2025 40
- विश्व रक्तदाता दिवस 2025 43
- न्यूरोक्रिटिकल केयर पर राज्य स्तरीय सम्मेलन 45
- माइक्रोविजन 2025 47
- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों का सशक्तिकरण 49
- जैव चिकित्सा नवाचारों पर एक दिवसीय कार्यशाला पर एक व्यापक विवरण 51
- स्मृतिवनम् वृक्षारोपण समारोह 2025 53
- एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी: स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के लिए ज्ञान केंद्र 56
- कन्याकुमारी ग्लास ब्रिज द्वारा विवेकानंद स्मारक शिला एवं थिरुवल्लुवर प्रतिमा को जोड़ने वाला अथक प्रयास: समुद्र के ऊपर रोमांचक पैदल चहल कदमी 58
- चित्रों और सृजन का पर्व 62
- गर्भावस्था से मातृत्व तक का सफर; मेरी बिटिया; बुढापे का सच 67

श्री चित्रा परिवार की श्रद्धांजलि: डॉ. एम. एस. वलियाथन – नवाचार के मार्गदर्शक और प्रेरक प्रकाशपुंज

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम का सम्पूर्ण परिवार अपने संस्थापक एवं प्रेरणास्रोत **पद्मविभूषण डॉ. मार्थंड वर्मा शंकरन वलियाथन** को सादर नमन करता है। उनका निधन जुलाई 2024 में हुआ, जिससे एक युग का अंत हो गया — किंतु उनका दृष्टिकोण, उनका आदर्श और उनका प्रकाश आज भी संस्थान के प्रत्येक गलियारे, प्रयोगशाला और हृदय में जीवंत है।

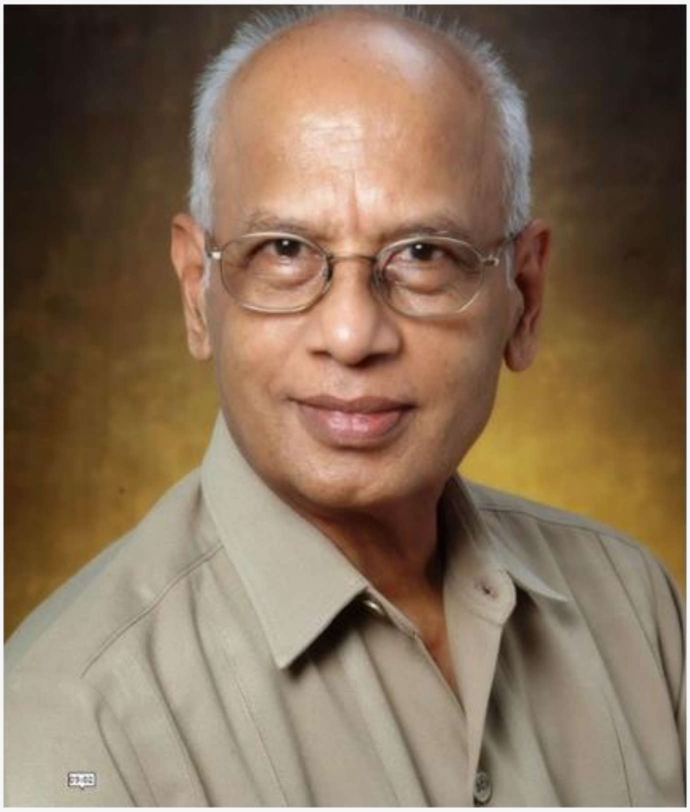

समय से आगे की दृष्टि रखने वाले दूरदर्शी

जब डॉ. वलियाथन ने 1979 में श्री चित्रा का नेतृत्व संभाला, तब उन्होंने इस संस्थान को एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की, जहाँ चिकित्सा विज्ञान और अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) एक साथ आगे बढ़ें। उस समय भारत चिकित्सा उपकरणों के लिए विदेशी तकनीक पर निर्भर था, लेकिन उन्होंने आत्मनिर्भरता की राह दिखाई। उनका विश्वास था कि एक विकासशील देश को अपनी स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी स्वयं बनानी और विकसित करनी चाहिए।

उनकी प्रेरणा और नेतृत्व में 1980 में बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग की स्थापना पूजापुरा में हुई — यह देश का पहला ऐसा केंद्र था, जहाँ चिकित्सक, अभियंता, रसायनज्ञ और जीवविज्ञानी एक साथ चिकित्सा उपकरणों के विकास पर कार्य कर रहे थे। उनके मार्गदर्शन में चित्रा हृदय वाल्व, ब्लड बैग, ऑक्सीजनरेटर, वेस्कुलर ग्राफ्ट तथा हाइड्रोसेफेलस शंट जैसे अनेक उपकरण भारत में ही विकसित किए गए। इन आविष्कारों ने असंख्य जीवन बचाए और भारत को विश्व चिकित्सा प्रौद्योगिकी मानचित्र पर स्थापित किया।

'Let us share the shade of love' congratulations to Dr. M.S. Valiathan on being conferred Padmasree. Dr. Mohan Singh speaks on the occasion Dr.Ashima Valiathan, Dr. Valiathan, Dr. Hameed are seen

29-9-2001

Prof. M.S.Valiathan inaugurates the Alumni Day
Venue: Achutha Menon Center Auditorium

First Openheart Surgery Team, met on the Alumni Day

शिक्षक, वैज्ञानिक और नैतिक नेतृत्व का प्रतीक

डॉ. वलियाथन न केवल वैज्ञानिक नहीं, बल्कि एक महान शिक्षक भी थे। उन्होंने संस्थान में शैक्षणिक कार्यक्रमों को नया स्वरूप दिया और एम.सीएच (हृदय एवं वक्ष शल्य चिकित्सा) तथा डीएम (हृदय रोग) जैसे उच्चस्तरीय पाठ्यक्रमों की शुरुआत की। उनके सख्त शैक्षणिक मानदंड और अनुसंधान के प्रति निष्ठा आज भी संस्थान की पहचान हैं। उन्होंने अनुसंधान में नैतिकता और पारदर्शिता को सर्वोच्च महत्व दिया। 1984 में उन्होंने संस्थान में भारत की पहली संस्थागत नैतिक समिति की स्थापना की, ताकि प्रत्येक अनुसंधान कार्य मानवता और नैतिक मूल्यों के अनुरूप हो। अनुशासन, ईमानदारी और उत्तरदायित्व पर आधारित उनका दृष्टिकोण संस्थान की नैतिक नींव बन गया

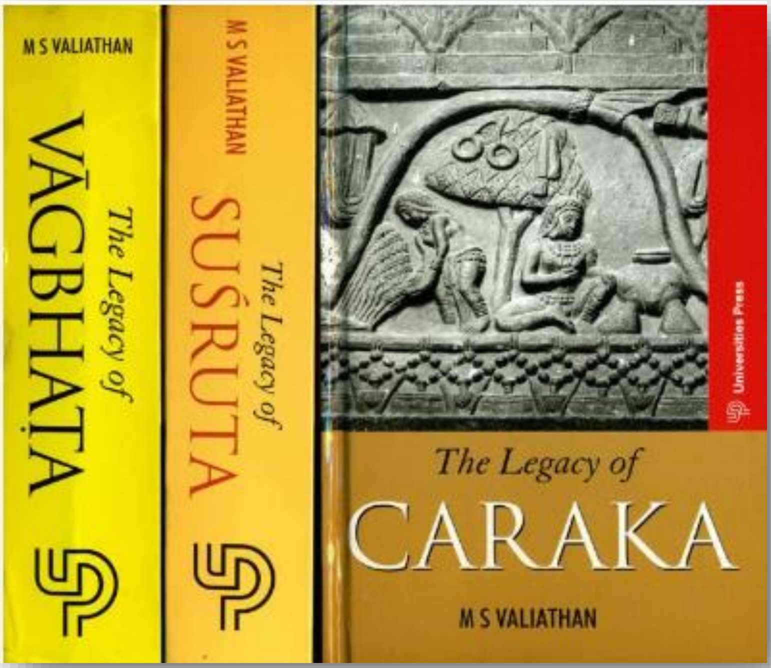

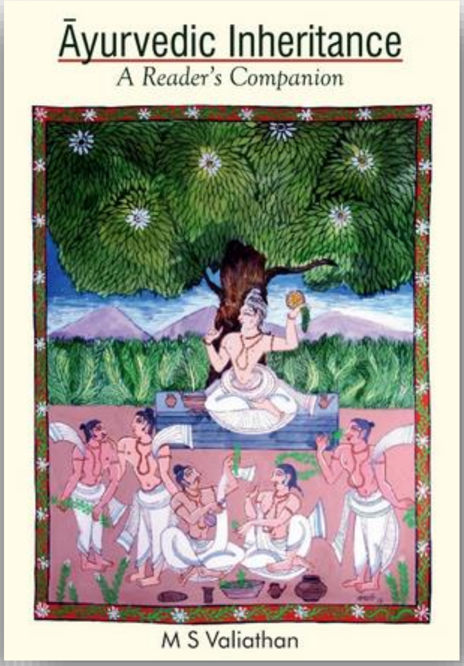

सेवा और विद्वता का अनमोल संगम

प्रशासनिक उत्तरदायित्वों से परे, डॉ. वलियाथन एक अद्वितीय विद्वान भी थे — एक शल्य चिकित्सक, जैव-चिकित्सा वैज्ञानिक और चिकित्सा इतिहासकार। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष, तथा मणिपाल विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भी देश की सेवा की। उनके द्वारा लिखित तीन प्रसिद्ध ग्रन्थ दी लिगेसी ऑफ़ चरक, दी लिगेसी ऑफ़ सुश्रुता, दी लिगेसी ऑफ़ वाग्भट्ट भारतीय चिकित्सा परंपरा और आधुनिक विज्ञान के बीच सेतु का कार्य करते रहेंगे। चरक की विरासत में, उन्होंने कल्पना की कि ऋषि हमारी पीढ़ी के चिकित्सकों को संबोधित कर रहे हैं: 'आपको यह याद रखना चाहिए कि आप एक नए क्षेत्र में हैं जहाँ ज्ञान को बुद्धिमत्ता से अधिक महत्व दिया जाता है, जहाँ लाभ को खुशी से भ्रमित किया जाता है और सफलता को विजय समझ लिया जाता है। आपको देखना चाहिए कि आप कहाँ हैं और आप किस ओर जा रहे हैं। मुझसे चमत्कार की अपेक्षा न करें। मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। मैंने आपको एक ऐसी विरासत छोड़ी है जो सर्वव्यापी होने के बावजूद, ज्ञान, अनुभव और विश्वास के अज्ञात भंडारों की दुनिया में विद्यमान है। आपका कर्तव्य है कि आप अपने पूर्वजों की तरह इस पथहीन भूमि का अन्वेषण करें और अपनी उपचार शक्ति को बढ़ाएँ। लेकिन ज्ञान का महिमामंडन करने के बजाय, आपको अतिवाद और निर्णय की त्रुटियों से मुक्त, अच्छे आचरण का उत्सव मनाना चाहिए। आयुर्वेद का आह्वान स्वार्थी लक्ष्यों या सांसारिक सुखों के लिए नहीं, बल्कि साथी प्राणियों के प्रति करुणा के लिए है। मेरी विरासत को जानने की कोशिश में, आपने एक सार्वभौमिक वृक्ष के पत्ते ही देखे हैं, जो आपकी आँखों के लिए बहुत विशाल है। आपकी दृष्टि बढ़े और आपकी खोज कभी समाप्त न हो।'

श्री चित्रा की आत्मा के रूप में उनका अमर योगदान

श्री चित्रा परिवार के लिए डॉ. वलियाथन केवल **एक संस्थापक नहीं, बल्कि संस्थान की आत्मा हैं। आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक गहराई, मानवीय दृष्टिकोण और राष्ट्रसेवा के उनके सिद्धांत** आज भी हर शोध और हर प्रयास का आधार हैं।

संस्थान के विद्यार्थी, वैज्ञानिक और पूर्व छात्र आज भी उन्हें केवल एक संस्थापक नहीं, बल्कि एक **मार्गदर्शक और प्रेरक गुरु** के रूप में स्मरण करते हैं। उनका विनम्र स्वभाव, गहन ज्ञान और दूरदर्शी दृष्टि नई पीढ़ियों को समाज के कल्याण के लिए विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

डॉ. एम. एस. वलियाथन सदैव श्री चित्रा के **'प्रेरक प्रकाशपुंज'** के रूप में अमर रहेंगे — वह संगीतज्ञ जिन्होंने विज्ञान, चिकित्सा और मानवता के सुरों को एक अद्भुत समरसता में बाँधा। उनकी ज्योति आने वाली पीढ़ियों को सदैव मार्ग दिखाती रहेगी। डॉ. वलियाथन अपना पार्थसारथी व्याख्यान में भाषण देते हुए यह आखिरी बार था जब उन्होंने अपने श्री चित्रा परिवार को संबोधित किया।

****

अंतरिक्ष से देशों की सीमाएँ दिखाई नहीं देतीं, जिससे वैश्विक एकता का एक सशक्त आभास होता है, जबकि भारत द्वि-आयामी मानचित्र की तुलना में "भव्य" और कहीं अधिक बड़ा दिखाई देता है। पृथ्वी को मानवता के लिए एक "सीमाहीन" और एकीकृत घर के रूप में देखा जा सकता है।

शुभांशु शुक्ला *(भारतीय अंतरिक्ष यात्री, अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) से एक्सिओम-4 मिशन के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से वार्तालाप करते हुए शब्द, जून 28, 2025)*

गणतंत्र दिवस समारोह

श्री चित्रा तिरुनाल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम में 76वाँ गणतंत्र दिवस अत्यंत उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। निदेशक महोदय ने अस्पताल शाखा तथा बीएमटी शाखा – दोनों स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर समारोह का शुभारंभ किया।अपने संबोधन में निदेशक ने गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और संस्थान के सभी कर्मचारियों के समर्पण एवं उत्कृष्ट कार्य की सराहना की। इस अवसर पर कर्मचारियों को सेवा पुरस्कार प्रदान किए गए, साथ ही उत्कृष्ट योगदान के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार भी दिया गया। समारोह ने राष्ट्रभक्ति, एकता और समर्पण की भावना को अभिव्यक्त किया तथा संस्थान परिवार में गर्व और प्रेरणा का संचार किया।

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना ब्लॉक
(पी एम एस एस वाई)
श्री चित्रा तिरुनाल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान का नया अध्याय

श्री चित्रा तिरुनाल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम में स्थापित प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई) ब्लॉक संस्थान की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। इसका उद्देश्य उच्चस्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं, अनुसंधान और प्रशिक्षण सुविधाओं को और अधिक सशक्त बनाना है। प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के अंतर्गत निर्मित यह नया सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक विशेष रूप से न्यूरोसर्जरी और हृदय-धमनी शल्य चिकित्सा पर केंद्रित है।

20 फरवरी 2025 को इस ब्लॉक का उद्घाटन **केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह** (राज्यमंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग मंत्रालय) द्वारा, विशिष्ट अतिथि, श्री सुरेश गोपी (पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस एवं पर्यटन राज्य मंत्री, भारत सरकार), श्री वी. मुरलीधरन (भारत के पूर्व विदेश राज्य मंत्री), वीना जॉर्ज (केरल सरकार की स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास मंत्री), डॉ शशि थरूर (लोकसभा सदस्य, त्रिवेंद्रम), डॉ विजय कुमार सारस्वत (सदस्य नीति आयोग, पूर्व महानिदेशक डीआरडीओ), और राज्य के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों, प्रबुद्ध मंडलों और नेताओं की उपस्थिति में किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. सिंह ने कहा कि यह विस्तार सरकार के उस लक्ष्य की दिशा में एक बड़ा कदम है, जिसके अंतर्गत देश के हर नागरिक को उन्नत और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराई जानी हैं। उन्होंने एससीटीआईएमएसटी से आग्रह किया कि वह इस नये ब्लॉक को आधार बनाकर न्यूरोसर्जरी और हृदय-धमनी अनुसंधान का वैश्विक केंद्र बने।

यह पीएमएसएसवाई ब्लॉक एससीटीआईएमएसटी की स्वास्थ्य सेवाओं, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण क्षमता को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा। अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ, सर्जरी थिएटर और आधुनिक सुविधाएँ इसे एक अग्रणी सुपर स्पेशियलिटी केंद्र बनाती हैं। यह उद्घाटन न केवल संस्थान के विकास का प्रतीक है, बल्कि भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और नवाचार की दिशा में एक सशक्त कदम भी है।

यह भवन **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय** तथा **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग** के संयुक्त वित्तपोषण से निर्मित हुआ है, जिसकी कुल लागत लगभग **₹230 करोड़** है। निर्माण कार्य **केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (केंद्रीय लोक निर्माण विभाग)** द्वारा पूरा किया गया, और वर्तमान में संस्थान आवश्यक चिकित्सीय उपकरणों की खरीद एवं कर्मियों की नियुक्ति की प्रक्रिया में है।

माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री, ने इस महत्वपूर्ण अवसर पर अपना विशेष वीडियो संदेश दिया ।

RESERVED

RESERVED

संस्थान दिवस एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम ने 28 फरवरी 2025 को संस्थान दिवस एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का संयुक्त रूप से भव्य आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन अच्युत मेनन सेंटर फॉर हेल्थ साइंसेज़ के सभागार में किया गया, जिसका संचालन अकादमिक मामलों के प्रभाग) ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रार्थना से हुआ, जिसके बाद शैक्षिक डीन ने सभी अतिथियों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों का स्वागत किया। दीप प्रज्वलन समारोह का नेतृत्व डॉ. हरकृष्ण वर्मा, प्रमुख, बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग ने किया।समारोह में कई प्रतिष्ठित अधिकारियों को सम्मानित किया गया, जिनमें डॉ. कृष्णकुमार के. (एसोसिएट मेडिकल सुपरिंटेंडेंट), श्रीमती निर्मला एम.ओ. (नर्सिंग सुपरिंटेंडेंट), तथा डॉ. जयश्री आर.एस. (एसोसिएट डीन) प्रमुख रहे। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. मोहनशंकर एस., प्रोफेसर, आईआईटी मद्रास, ने पोस्टर प्रतियोगिता, पेंटिंग प्रतियोगिता एवं एक्सीलेंस पुरस्कारों के विजेताओं को सम्मानित किया।

अपने संबोधन में डॉ. मोहनशंकर ने आईआईटी मद्रास के हेल्थकेयर टेक्नोलॉजी इनोवेशन सेंटर और ब्रेन सेंटर की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने ब्रेन मैप/ ब्रेन एटलस के विकास और उसमें उपयोग की जा रही नवीन तकनीकों का परिचय कराया।

व्याख्यान के बाद प्रतिभागियों ने उनसे वैज्ञानिक संवाद भी किया। इसके उपरांत उन्होंने पोस्टर और पेंटिंग प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा प्रतिभागियों से बातचीत की। कार्यक्रम का समापन डॉ. मणिकंदन एस. (उप निदेशक) के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रीय गान के साथ हुआ। उसी दिन बी एम् टी

स्कंध में भी राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस वर्ष का विषय था – "**विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना**।" इस अवसर पर नेशनल कॉलेज, महात्मा गांधी कॉलेज, केरल विश्वविद्यालय, करियावत्तोम परिसर, तथा शिव नादर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के विद्यार्थी और शिक्षक भी शामिल हुए। कार्यक्रम का आरंभ डॉ. मनोज कोमथ (वैज्ञानिक जी) द्वारा परिचय सत्र से हुआ, जिसके बाद विद्यार्थियों को विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कराया गया, जहाँ वैज्ञानिकों और शोधार्थियों ने अपने अनुसंधान कार्यों का प्रदर्शन किया। दोपहर में संयोजन उपकरण (सी डी) ब्लॉक में मुख्य व्याख्यान सत्र आयोजित हुआ, जिसमें डॉ. सुजेश एस. (इंजीनियर जी) ने अतिथि का परिचय दिया।

डॉ. मोहनशंकर एस. ने फंक्शनल ब्रेन इमेजिंग विषय पर प्रेरक व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने मस्तिष्क की सूक्ष्म और स्थूल संरचनाओं को जोड़ने वाले अनुसंधान की जानकारी साझा की। अंत में उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया गया, और डॉ. फ्रांसिस बी. फर्नांडेज़ (वैज्ञानिक डी) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस प्रकार, संस्थान दिवस एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 का समारोह नवाचार, शिक्षा और वैज्ञानिक जागरूकता का एक सुंदर संगम सिद्ध हुआ, जिसने एससीटीआईएमएसटी परिवार की अनुसंधान भावना और वैज्ञानिक दृष्टि को और अधिक सशक्त बनाया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस २८ फरवरी २०२५ को मनाया गया। इस वर्ष का प्रसंग "*विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व हेतु भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना*" था। यह दिवस सी.वी. रमन द्वारा रमन प्रभाव की खोज के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला था। इस अवसर पर विज्ञान को बढ़ावा देने और युवाओं को विकसित भारत के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करने पर केंद्रित गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

माननीय संस्थान अध्यक्ष एवं डीएसटी टीम का नए पीएमएसएसवाई भवन का दौरा
८ मार्च 2025

माननीय पूर्व संस्थान अध्यक्ष श्री के एम् चन्द्रशेखर का नए पीएमएसएसवाई भवन का दौरा, १ अप्रेल २०२५

एस सी टी आई एम एस टी का 41वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह : नवाचार और उत्कृष्टता का उत्सव

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम का 41वाँ वार्षिक दीक्षांत समारोह तथा 8वाँ जी. पार्थसारथी व्याख्यान समारोह 10 मई 2025 को संस्थान परिसर में भव्य रूप से आयोजित किया गया। यह समारोह संस्थान की शैक्षणिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा, जिसमें चिकित्सा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान में उत्कृष्टता का उत्सव मनाया गया।

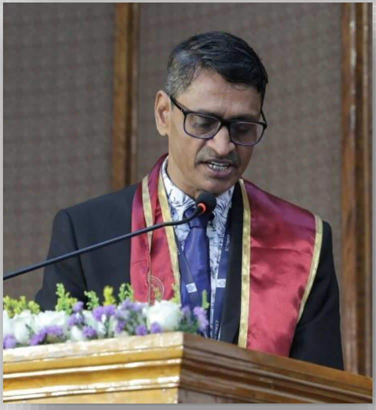

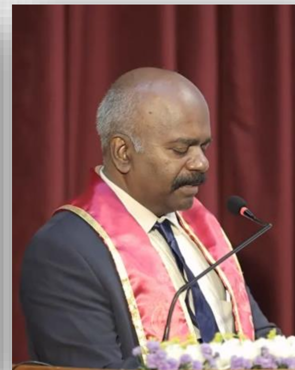

जी. पार्थसारथी व्याख्यान का संबोधन डॉ. गोविंदन रंगराजन, निदेशक, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु ने *"ब्रेन-मशीन इंटरफेस द्वारा स्वायत्त नेविगेशन"* विषय पर दिया। उन्होंने न्यूरोसाइंस और प्रौद्योगिकी के सम्मिश्रण से उत्पन्न हो रहे नए अवसरों पर विचार साझा किए। समारोह का समापन संस्थान के डीन डॉ. के. श्रीनिवासन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह आयोजन संस्थान की निरंतर प्रगति, नवाचार और राष्ट्र निर्माण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का प्रतीक बना।

विशिष्ट अतिथि डॉ. गगनदीप कांग, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन से, ने संस्थान के चिकित्सा, जैव अभियांत्रिकी और जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में किए जा रहे अग्रणी कार्यों की सराहना की। उन्होंने अनुसंधान में नैतिकता और सहयोग की भावना को अत्यंत आवश्यक बताया।

इस अवसर पर **139 विद्यार्थियों और सीनियर रेज़िडेंट्स** को **डीएम, एमसीएच, पीएचडी, एमपीएच, एमएस** तथा विभिन्न **डिप्लोमा कार्यक्रमों** में उपाधियाँ प्रदान की गईं। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को विशेष सम्मान भी दिए गए।

वॉल ऑफ ऑनर
WALL OF HONOUR

जी. पार्थसारथी व्याख्यान 2025: मस्तिष्क और मशीन के संगम की दिशा में एक प्रेरक पहल

श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम में प्रतिष्ठित **8वाँ जी. पार्थसारथी व्याख्यान** का आयोजन 10 मई 2025 के 41वें वार्षिक दीक्षांत समारोह के महत्वपूर्ण अवसर पर किया गया। इस वर्ष का व्याख्यान **भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलुरु** के निदेशक एवं गणित विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर **डॉ. गोविंदन रंगराजन** द्वारा दिया गया।

डॉ. रंगराजन ने अपने व्याख्यान का विषय रखा - **"ऑटोनोमस नेविगेशन यूसिंग दी ब्रेन-मशीन इंटरफ़ेस" (मस्तिष्क–मशीन इंटरफेस द्वारा स्वायत्त नेविगेशन)**। यह विषय न केवल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, बल्कि मानव मस्तिष्क की क्षमताओं और विज्ञान के नए क्षितिजों को उजागर करने वाला था। उन्होंने बताया कि कैसे मस्तिष्क से उत्पन्न संकेतों को मशीनों तक पहुँचाकर मानव-मशीन समन्वय को साकार किया जा सकता है।

अपने व्याख्यान में उन्होंने **ब्रेन-मशीन इंटरफेस (बीएमआई)** की कार्यप्रणाली, उसके अनुप्रयोग और उसकी वैज्ञानिक चुनौतियों पर गहन चर्चा की। उन्होंने समझाया कि यह तकनीक मस्तिष्क की विद्युत गतिविधियों को सेंसरों द्वारा पकड़कर, उन्हें कंप्यूटेशनल एल्गोरिद्म की मदद से मशीनों के नियंत्रण संकेतों में परिवर्तित करती है। इससे **स्वायत्त रोबोट, कृत्रिम अंग, और पुनर्वास तकनीकों** में नई संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

डॉ. रंगराजन ने यह भी रेखांकित किया कि मस्तिष्क-मशीन इंटरफेस न केवल चिकित्सा विज्ञान में, बल्कि रक्षा, परिवहन और संज्ञानात्मक अनुसंधान में भी क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि आने वाला युग बहु-विषयक (अंतर-विषयक) अनुसंधान का है, जहाँ गणित, इंजीनियरिंग, न्यूरोसाइंस और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एकीकरण ही भविष्य की कुंजी बनेगा।

उनका व्याख्यान श्रोताओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा। वैज्ञानिक दृष्टि, नवाचार की भावना और अनुसंधान की गहराई से परिपूर्ण यह प्रस्तुति **जी. पार्थसारथी व्याख्यान श्रृंखला** के गौरवशाली इतिहास में एक और मील का पत्थर सिद्ध हुई।

****

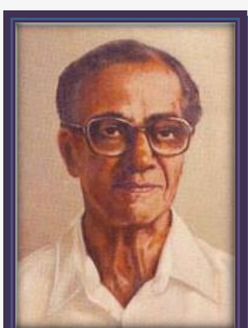

जी. पार्थसारथी श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) के संस्थापक अध्यक्ष थे और 1991 से 1994 तक इस पद पर कार्यरत रहे। संस्थान अब उनकी स्मृति में उनके सम्मान में वार्षिक "जी. पार्थसारथी व्याख्यान" का आयोजन करता है जो संस्थान के वार्षिक दीक्षांत समारोह का हिस्सा होता है। यह व्याख्यान प्रतिष्ठित वक्ताओं द्वारा दिया जाता है और उनकी स्मृति में एक श्रद्धांजलि है।

दक्षिण भारत राजभाषा क्षेत्रीय वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक सम्मेलन

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में नैनो एवं मृदु पदार्थ विज्ञान केंद्र, बेंगलुरु द्वारा 6-7 मार्च 2025 के दौरान दक्षिण भारत राजभाषा क्षेत्रीय वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में डॉ. अरुण अनिरुद्धन और डॉ. कमलेश के. गुलिया ने एससीटीआईएमएसटी, त्रिवेंद्रम का प्रतिनिधित्व किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य प्रशासनिक मामलों में राजभाषा को बढ़ावा देना और वैज्ञानिक एवं तकनीकी निष्कर्षों को हिंदी भाषा में अभिव्यक्त करना था ताकि वे जन-जन तक पहुँच सकें। प्रोफेसर टाटा एन राव की अध्यक्षता में, सम्मानित अधिकारियों सुश्री ए. धनलक्ष्मी (संयुक्त सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, सतर्कता), प्रोफेसर बीएलवी प्रसाद (निदेशक, सीईएनएस), डॉ. प्रशांत धाकेफालकर (निदेशक, अगरकर शोध संस्थान) ने हिंदी में विचार-विमर्श किया। अन्य सत्रों में, विभिन्न विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों के प्रतिनिधियों ने हिंदी में अपने शोध साझा किए।

14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता ह। सन् 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति) ने इस दिन अपने बधाई भाषण में कहा - "*यह मानसिक दशा का भी प्रश्न है जिसका हमारे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। हम केन्द्र में जिस भाषा का प्रयोग करेंगे उससे हम एक-दूसरे के निकटतर आते जाएँगे। आख़िर अंग्रेज़ी से हम निकटतर आए हैं, क्योंकि वह एक भाषा थी। अब उस अंग्रेज़ी के स्थान पर हमने एक भारतीय भाषा को अपनाया है। इससे अवश्यमेव हमारे संबंध घनिष्ठतर होंगे, विशेषतः इसलिए कि हमारी परम्पराएँ एक ही हैं, हमारी संस्कृति एक ही है और हमारी सभ्यता में सब बातें एक ही हैं। हमने यथासम्भव बुद्धिमानी का कार्य किया है और मुझे हर्ष है, मुझे प्रसन्नता है और मुझे आशा है कि भावी संतति इसके लिए हमारी सराहना करेगी*"।

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह 26 जून 2025, भारत मंडपम, नई दिल्ली

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने 26 जून को भारत मंडपम, नई दिल्ली में स्वर्ण जयंती समारोह के रूप में अपनी 50वीं वर्षगांठ मनाई, जिसमें डॉ. अनुज्ञा भट्ट, डॉ. नरेश कासोजू, श्री शिजू वी. एस. और डॉ. कमलेश के गुलिया ने श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम का प्रतिनिधित्व किया। माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह इस भव्य स्वर्ण जयंती समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने स्वर्ण जयंती समारोह में सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलने के प्रण को गुंजित किया और 50 रुपये का स्मारक सिक्का भी जारी किया (ऊपर चित्र में दिखाया गया)

श्रीमती रेखा गुप्ता (दिल्ली की मुख्यमंत्री), श्री बंदी संजय कुमार (भारत के गृह राज्य मंत्री), श्री भरतरी महताब (उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति) डॉ. सुधांशु त्रिवेदी (सदस्य, राज्य सभा), श्रीमती सुधामूर्ति (सदस्य, राज्य सभा), श्री अतुल कोठारी (राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली), डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन (हिंदी शिक्षाविद एवं लेखिका, दक्षिण भारत, तमिल) और श्री बालेश्वर राय (पूर्व सचिव (सेवानिवृत्त), राजभाषा विभाग) सहित कई प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई और राजभाषा की प्रगति पर अपने विचार साझा किए।

एससीआईएमएसटी द्वारा राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती में भागीदारी

राजभाषा विभाग (राजभाषा विभाग) का स्वर्ण जयंती समारोह गृह मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में 11 जुलाई 2025 को जी.एम.सी. बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गाचीबोवली, हैदराबाद में आयोजित किया गया। यह समारोह केंद्र सरकार के संस्थानों और प्रशासनिक ढाँचों में हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने में विभाग द्वारा किए गए 50 वर्षों के अनुकरणीय योगदान का प्रतीक था।

इस कार्यक्रम में आंध्र प्रदेश के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री पवन कल्याण सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अपने मुख्य भाषण में, उन्होंने राष्ट्रीय एकता और प्रभावी शासन को बढ़ावा देने में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला, साथ ही भाषाई समावेशिता और सुगम्यता की आवश्यकता पर भी बल दिया। अन्य उल्लेखनीय उपस्थित लोगों में माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी; माननीय राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह; तेलंगाना की प्रख्यात हिंदी विद्वान श्रीमती मणिक्यम्बा; और तमिलनाडु के प्रख्यात हिंदी शिक्षाविद् श्री अनंतकृष्णन शामिल थे। इस कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, प्रदर्शनियाँ और सत्र आयोजित किए गए, जिनमें प्रशासन, शिक्षा और डिजिटल परिवर्तन में हिंदी की भूमिका पर ज़ोर दिया गया।

श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम के एक प्रतिनिधिमंडल (डॉ. मनोज जी, वैज्ञानिक (एफ, इंजीनियर सौरभ एस. नायर, इंजीनियर (डी), इंजीनियर सुभाष एन.एन., इंजीनियर (डी), डॉ. संतोष कुमार बी, कुलसचिव) ने इस समारोह में भाग लिया।

उनकी भागीदारी भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस कार्यक्रम ने ज्ञान के आदान-प्रदान, सहयोग और आधिकारिक संचार एवं गतिविधियों में हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में संस्थागत प्रयासों की पुनः पुष्टि के लिए एक मंच प्रदान किया।

****

राजभाषा कार्यान्वयन पर रिपोर्ट (जनवरी – जून 2025)

राजभाषा कार्यान्वयन पर रिपोर्ट (जनवरी – जून 2025) वर्ष 2025 की पहली छमाही में स्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम में राजभाषा (हिंदी) के कार्यान्वयन में निरंतर प्रगति दर्ज की गई। राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बीएमटी तथा अस्पताल विंग) के निर्देशन में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ और कार्यक्रम आयोजित किए गए।राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित बैठकों के माध्यम से प्रगति की समीक्षा की गई तथा भविष्य की कार्य योजनाएँ तैयार की गईं। कार्यालयीन कार्यों, टिप्पणियों और पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया। राजभाषा नीति के अनुपालन में संस्थान के विभिन्न विभागों में त्रिभाषी नाम पट्ट एवं संकेत पट्ट लगाए गए।कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के व्यावहारिक प्रयोग के उद्देश्य से एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त, प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के महत्व पर जागरूकता कार्यक्रम भी संपन्न किए गए। कर्मचारियों को ई-ऑफिस एवं आंतरिक पत्राचार में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित किया गया।संस्थान ने टोलिक (टाउन ऑफिशियल लैंग्वेज इम्प्लीमेंटेशन कमेटी) की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा सदस्य कार्यालयों में द्विभाषिक कार्य वातावरण को प्रोत्साहित करने हेतु चर्चाओं में योगदान दिया।इन सभी प्रयासों के माध्यम से एससीटीआईएमएसटी ने वर्ष 2025 की पहली छमाही में दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और सुदृढ़ किया तथा राजभाषा के प्रगतिशील कार्यान्वयन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित किया।

मूल बातों की ओर वापसी २०२५ (बैक टू बेसिक्स २०२५), 17-19 जनवरी, 2025
हृदय हस्तक्षेपों की मूल बातों पर सिम्युलेटर आधारित लघु पाठ्यक्रम
(हृदय रोग विभाग द्वारा आयोजित)

केयरगिवर लाउंज (देखभालकर्ता विश्रांतिका) का उद्‌घाटन, ६ फरवरी २०२५

भारत-अमेरिका फ्लो साइटोमेट्री कार्यशाला 2025

भारत-अमेरिका फ्लो साइटोमेट्री कार्यशाला 2025, 11 से 13 फ़रवरी, 2025 तक, श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम, केरल, भारत के कॉम्बिनेशनल डिवाइसेस ब्लॉक में आयोजित की गईं। कार्यशालाओं का आयोजन श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान और ट्रस्ट फॉर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग इन फ्लोसाइटोमेट्री, इंडिया (टीईटीसी) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। कार्यशाला को डीबीटी सर्ब और टीईटीसी द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी। कार्यशाला के लिए डीबीटी सहज सुविधा का उपयोग किया गया।

कार्यशालाओं को शोधकर्ताओं, चिकित्सकों और फ्लो साइटोमेट्री के विशेषज्ञों के लिए विभिन्न स्तरों में विभाजित किया गया था, जिनमें शामिल थे:

बेसिक रिसर्च वर्कशॉप (11 - 13 फ़रवरी 2025)
बेसिक रिसर्च वर्कशॉप ने फ्लो साइटोमेट्री के मूलभूत सिद्धांतों का परिचयात्मक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया, जिससे अनुसंधान में इसके अनुप्रयोगों में रुचि रखने वाले प्रतिभागियों को व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। प्रतिनिधियों को नमूना तैयार करने, डेटा अधिग्रहण और अनुसंधान परिवेशों में प्रयुक्त विश्लेषण तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया। इस सत्र में कोशिका चक्र विश्लेषण और प्रसार, एपोप्टोसिस, बेसिक इम्यूनोफेनोटाइपिंग और कोशिका छंटाई जैसे मॉड्यूल पढ़ाए गए।

उन्नत अनुसंधान कार्यशाला (11 - 13 फ़रवरी 2025)
अनुभवी शोधकर्ताओं के लिए डिज़ाइन की गई इस कार्यशाला में जटिल अनुसंधान क्षेत्रों में उन्नत फ्लो साइटोमेट्री तकनीकों और अनुप्रयोगों पर गहन चर्चा की गई। प्रतिभागियों ने नवीनतम नवाचारों, डेटा व्याख्या विधियों, मल्टीकलर इम्यूनोफेनोटाइपिंग, इंट्रासेल्युलर स्टेनिंग, साइटोकाइन्स के लिए मल्टीप्लेक्स बीड ऐरे एसे, लघु कण विश्लेषण और फ्लो साइटोमेट्री का उपयोग करके कोशिका छंटाई पर गहन चर्चा की।

बुनियादी नैदानिक कार्यशाला (11-12 फ़रवरी 2025): फ्लो साइटोमेट्री के नैदानिक अनुप्रयोगों पर केंद्रित इस कार्यशाला में निदान और चिकित्सीय निगरानी में साइटोमेट्रिक तकनीकों की मूल बातें शामिल की गईं। यह कार्यशाला उन स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए थी जो प्लेटलेट इम्यूनोफेनोटाइपिंग और सक्रियण, हेमोलिटिक एनीमिया और लिम्फोमा में फ्लो साइटोमेट्री की उपयोगिता को समझना चाहते थे। उन्नत नैदानिक कार्यशाला (11-12 फ़रवरी 2025) यह कार्यशाला नैदानिक साइटोमेट्री में पूर्व अनुभव वाले चिकित्सा पेशेवरों के लिए थी। इस कार्यशाला में उन्नत नैदानिक अनुप्रयोगों पर चर्चा की गई, जिसमें एमपीएन और सीएमएमएल में एफसीएम की उपयोगिता, साथ ही हेमेटोलिम्फॉइड नियोप्लाज्म में एमआरडी विश्लेषण - बुनियादी अवधारणाएँ और नैदानिक निहितार्थ शामिल हैं।

प्रतिरक्षा विकार नैदानिक कार्यशाला (11 - 12 फ़रवरी 2025) प्रतिरक्षा प्रणाली विकारों पर केंद्रित इस विशेष कार्यशाला में आईईआई (प्रतिरक्षा की जन्मजात त्रुटियाँ) का अवलोकन प्रस्तुत किया गया। विशेषज्ञों ने विभिन्न विकारों में प्रतिरक्षा विकार और स्वप्रतिरक्षा में साइटोमेट्री के उपयोग पर चर्चा की।

एक दिवसीय सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) सत्र (13 फ़रवरी 2025) इस कार्यक्रम का समापन एक दिवसीय सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) सत्र के साथ हुआ, जिसमें फ्लो साइटोमेट्री, इम्यूनोलॉजी और नैदानिक निदान में नवीनतम प्रगति के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की गई। यह सत्र उन स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए डिज़ाइन किया गया था जो इन तेज़ी से विकसित हो रहे क्षेत्रों में अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाना चाहते हैं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अंतरिक्ष विभाग और श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने अंतरिक्ष चिकित्सा में सहयोग पर रूपरेखा समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर कार्यक्रम

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), अंतरिक्ष विभाग (डीओएस) और श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), विज्ञानं एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) ने 'अंतरिक्ष चिकित्सा में सहयोग पर रूपरेखा संझौता ज्ञापन' पर हस्ताक्षर किये। यह साझेदारी देश में अंतरिक्ष चिकित्सा और इसके अनुप्रयोगों की प्रगति में एक महत्वपूणि मील का पत्थर है।

भारतीय मानव अंतरिक्ष कार्यकर्म, गगनयान, इसरो का एक राष्ट्रीय प्रयास है जो मानव स्वास्थ्य अनुसंधान, सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण अनुसंधान, अंतरिक्ष चिकित्सा और अंतरिक्ष जीव विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रिय एजेंसियों, शिक्षविदों और उद्योग को एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। इसरो और एससीटीआईएमएसटी के बीच यह रूपरेखा समझौता ज्ञापन अंतरिक्ष चिकित्सा के विशिष्ट क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देगा, जिससे राष्ट्रीय मानव अंतरिक्ष कार्यकर्म को लाभ होगा और साथ ही मानव शरीरिक अध्ययन, व्यावहारिक स्वास्थ्य अध्ययन, जैव चिकित्सा सहयता प्रणाली, विकिरण जीव विज्ञानं और चिकित्सा, अंतरिक्ष वातावरण में मानव स्वास्थ्य और प्रदर्शन में सुधार के लिए प्रतिउपाय, टेलीमेडिसिन और संचार प्रोटोकॉल और अंतरिक्ष मिशनों के लिए चालक दल चिकित्सा किट के क्षेत्र में नवाचारों और विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह कार्यकर्म विशेष रूप से अंतरिक्ष चिकित्सा के क्षेत्र में अध्ययन और प्रयोगों के अवसर पैदा करेगा।

इसरो के अध्यक्ष और अंतरिक्ष विभाग के सचिव एवं अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष डॉ वी. नारायणन ने इस बात पर ज़ोर दिया की गगनयान का उद्देश्य अंतरिक्ष वातावरण में मानव अनुसंधान के क्षेत्र में राष्ट्र की क्षमता को बढ़ाना है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला की बाह्य अंतरिक्ष के चरम वातावरण में मानव स्वास्थ्य और प्रदर्शन को बनाए रखना दीर्घकालिक मानव अंतरिक्ष मिशनों की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन जैसा एक राष्ट्रीय अंतरिक्ष आधारित प्लेटफार्म, विशिष्ट अंतरिक्ष वातावरण का उपयोग करके हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के आधार पर अत्याधुनिक मानव अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास करने में सक्षम बनाएगा। यह सहयोग युवाओं को स्टेम क्षेत्रो में करियर बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे देश में नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

डॉ. क्रिस गोपालकृष्णन ने इच्छा व्यक्त की कि यह अभिनव उद्यम चिकित्सा उपकरण विकास के क्षेत्र में शिक्षा जगत और उद्योग क्षेत्र के बीच उत्कृष्ट सहयोग को बढ़ावा देगा।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के अतिरिक्त सचिव एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रभाग के प्रमुख डॉ. सुनील कुमार ने कहा कि अंतरिक्ष चिकित्सा में अनुसंधान एवं विकास से मानव शरीरक्रिया विज्ञान, मानव अनुकूलन, नए चिकित्सा उपकरणों और नैदानिक प्रक्रियाओं के विकास की समझ बढ़ेगी। अंतरिक्ष के लिए इन विकासों में पृथ्वी पर लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवा में सुधार की क्षमता है।

एससीटीआईएमएसटी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने इसरो के अध्यक्ष को धन्यवाद दिया और कहा कि एससीटीआईएमएसटी अंतरिक्ष चिकित्सा पर केंद्रित स्वच्छ कक्ष और सूक्ष्मगुरुत्व प्रयोगशालाओं के विकास, जैव-चिकित्सा उपकरणों के सह-विकास और अंतरिक्ष अन्वेषण हेतु विकसित उपकरणों को पृथ्वी पर मानव स्वास्थ्य के लिए उपयोगी बनाने में इसरो के साथ एक सार्थक सहयोग की आशा कर रहा है।

एससीटीआईएमएसटी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी और इसरो के वैज्ञानिक सचिव श्री गणेश पिल्लई ने इसरो के अध्यक्ष एवं अंतरिक्ष विभाग के सचिव डॉ. वी. नारायणन, एससीटीआईएमएसटी के अध्यक्ष श्री कृष्ण गोपालकृष्णन, भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अतिरिक्त सचिव एवं एआई प्रभाग के प्रमुख श्री सुनील कुमार, एससीटीआईएमएसटी के उप निदेशक प्रो. मणिकंदन और इसरो तथा एससीटीआईएमएसटी के अन्य वरिष्ठ संकाय सदस्यों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर समारोह में वीएसएससी के निदेशक डॉ. उन्नीकृष्णन नायर, एलपीएससी के निदेशक डॉ. मोहन, एचएसएफसी के निदेशक डॉ. दिनेश कुमार सिंह, आईआईएसटी, त्रिवेंद्रम के निदेशक डॉ. दीपांकर बनर्जी और इसरो मुख्यालय, बेंगलुरु के मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम के निदेशक श्री हनमंतरी बालुरागी उपस्थित थे।

विश्व निद्रा दिवस (14 मार्च 2025) समारोह रिपोर्ट
थीम 2025: निद्रा स्वास्थ्य को प्राथमिकता बनाएँ

विश्व निद्रा दिवस 14 मार्च 2025 को एस.सीटीआईएमएसटी के बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी (बीएमटी) विंग के एमएस वलियाथन मेडिकल डिवाइसेस एंड इंजीनियरिंग ब्लॉक सेमिनार हॉल में मनाया गया। इस वर्ष, विश्व निद्रा दिवस का उत्सवी माहौल उत्तर भारत में रंगों के त्योहार "होली" के उल्लास से ओतप्रोत था, जो उसी दिन मनाया गया। डब्लूएसडी 2025 का आयोजन निद्रा अनुसंधान विभाग (डीएसआर) की टीम द्वारा किया गया था। सुश्री शनि (शोध सहयोगी-सामाजिक कार्यकर्ता, डीएसआ) ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. प्रजिता राज (वरिष्ठ परियोजना सहयोगी ,डीएसआर) ने डॉ. हरिकृष्ण वर्मा, प्रमुख, बीएमटी विंग; डॉ. टी वी अनिल कुमार, विभागाध्यक्ष, अनुप्रयुक्त जीव विज्ञान विभाग; कार्यक्रम के सम्मानित वक्ताओं का सूरजमुखी और बटन बैज से स्वागत किया।

.

इस अवसर पर, डीएसआर प्रभारी डॉ. कमलेश के. गुलिया ने उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए इस जागरूकता कार्यक्रम के उद्देश्य और महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा वर्णित स्वास्थ्य की अवधारणा और वर्तमान जीवनशैली में नींद के स्वास्थ्य की भूमिका पर प्रकाश डाला। बीएमटी विंग के प्रमुख डॉ. हरिकृष्ण वर्मा ने उद्घाटन भाषण दिया और नींद के स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बेहतर प्रदर्शन और अच्छे स्वास्थ्य के लिए नींद को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि नींद के बारे में जागरूकता लाने के लिए डॉ. गुलिया द्वारा हर साल विश्व नींद दिवस का सावधानीपूर्वक आयोजन किया जाता है। अनुप्रयुक्त जीव विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. टीवी अनिल कुमार ने नींद के स्वास्थ्य के महत्व पर केंद्रित अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए।

माइक्रोबायोलॉजी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. दीनूप केपी ने आंत के स्वास्थ्य के लिए नींद के स्वास्थ्य पर व्याख्यान दिया। डॉ. दीनूप ने अच्छे स्वास्थ्य के लिए जीवन भर हमारे माइक्रोबायोटा प्रोफाइल के नियमन में नींद और सर्केडियन लय की निरंतर परस्पर क्रिया के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. गुलिया ने "क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और नींद उपभोक्ता प्रौद्योगिकी निद्रा के स्वास्थ्य में सहायक हो सकती है?" पर चर्चा की। उन्होंने दुनिया भर में उपभोक्ता नींद प्रौद्योगिकी बाजार के गतिशील वैश्विक परिदृश्य और व्यक्तिगत नींद चिकित्सा में इसके संभावित दायरे पर चर्चा की। उन्होंने ऑर्थोसोमनिया की नई अवधारणाओं पर भी बात की। फिजिकल मेड एंड रिहैब विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. जीजो वर्गीस ने "क्या गर्दन और बांह के दर्द के प्रबंधन से नींद के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है?" पर विस्तार से बताया। उन्होंने गर्दन और बांह के दर्द में मस्कुलोस्केलेटल सिस्टम की थकान का सुंदर वर्णन किया।

उनकी टीम के सदस्य, सुश्री अमीना और सुश्री आर्द्रा ने गर्दन और बांह की मांसपेशियों को आराम देने के लिए कुछ व्यायामों का लाइव प्रदर्शन किया। इंजीनियर अरविंद के प्रजापति ने नए माता-पिता की नींद की दुविधा के बारे में अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने काओरू इशिकावा द्वारा तैयार किए गए प्रसिद्ध फिशबोन आरेख पर आधारित नींद से निपटने की रणनीति भी तैयार की। अंत में, पीएचडी स्कॉलर सुश्री सेतुलक्ष्मी वीएस और बीएमटी विंग में मास्टर्स टेक्नोलॉजी की पढ़ाई कर रही सुश्री निहाल सीएम ने छात्र जीवन की चुनौतियों और नींद के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के उपायों को साझा किया और अपने वास्तविक अनुभवों से छात्रावास जीवन में नींद में खलल डालने वाले कारकों के बारे में जानकारी दी। बेहतर जीवन और समग्र कल्याण के लिए हमारी नींद को प्राथमिकता देने के सभी संभावित उपायों को तैयार करने के लिए विश्व नींद दिवस समारोह के दौरान कर्मचारियों के बीच नींद के स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई।

कमलेश के गुलिया, एक भारतीय निद्रा वैज्ञानिक, ने निद्रा के तंत्रिका-शरीरक्रिया विज्ञान, निद्रा के आनुवंशिक विकास और संज्ञान में इसकी भूमिका, तंत्रिका लचीलापन, तथा निद्रा व स्वास्थ्य में सुधार के लिए योग निद्रा के क्षेत्र में व्यापक शोध किया है। उन्होंने प्रसवपूर्व विकासात्मक अवधि (गर्भावस्था के दौरान नींद की कमी और प्रसवोत्तर शिशु पर प्रभाव) के दौरान निद्रा की भूमिका में योगदान दिया है, जो संतानों में संज्ञान और भावनात्मक व्यवहार को आकार देती है। उन्होंने विभिन्न जड़ी-बूटियों के माध्यम से अनिद्रा के प्रबंधन में भी योगदान दिया है। उन्होंने रजोनिवृत्ति के बाद की महिलाओं में नींद की गुणवत्ता और स्वास्थ्य में सुधार के लिए एक गैर-औषधीय हस्तक्षेप के रूप में योग निद्रा के उपयोग में योगदान दिया है। उन्होंने "**स्लीप विजडम फॉर चिल्ड्रन एज़ नेचर्स सिम्फनी**" नामक पुस्तक लिखी है, जो अंग्रेजी (2022) और मलयालम (2023) में प्रकाशित है।

(टीम, नींद अनुसंधान विभाग, बीएमटी विंग, एससीटीआईएमएसटी)

मई दिवस खेल 2025

केरल सरकार के श्रम विभाग की जिला खेल परिषद, विभिन्न संगठनों के कर्मचारियों में एथलेटिक क्षमता, टीम वर्क और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देने के लिए हर साल मई दिवस खेलों का आयोजन करती है। इस वर्ष, यह आयोजन 29 अप्रैल से 1 मई, 2025 तक आयोजित किया गया था, जिसमें ट्रैक एंड फील्ड और टीम स्पोर्ट्स सहित विविध खेल प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। विभिन्न संस्थानों के प्रतिभागियों ने विभिन्न श्रेणियों में शीर्ष सम्मान के लिए प्रतिस्पर्धा करते हुए अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में एक उद्घाटन समारोह, उत्कृष्ट एथलीटों के लिए विशेष सम्मान और विजेताओं के सम्मान में एक समापन समारोह भी शामिल था।

2390

2395

एससीटीआईएमएसटी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन

श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी) ने संस्थान के सभी छात्रों और कर्मचारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 (एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग) मनाया। इस कार्यक्रम में योग सत्रों की एक श्रृंखला और एक उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें दैनिक जीवन में योग के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

योग प्रशिक्षण सत्र का आयोजन बीएमटी विंग में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा में पीएचडी डॉ. आशियाना आलम ए.एम. और अस्पताल विंग में जैव रसायन विभाग की वैज्ञानिक सहायक (प्रयोगशाला) सुश्री मंगलम्मा एच.आर. के विशेषज्ञ मार्गदर्शन में किया गया। उन्होंने बुनियादी योग, प्राणायाम और आसन संतुलन के लिए योग जैसे विभिन्न योग आसनों का कुशलतापूर्वक प्रदर्शन और शिक्षण किया, जिससे सभी उपस्थित लोगों की सक्रिय भागीदारी और सहभागिता सुनिश्चित हुई।

उद्घाटन समारोह में एससीटीआईएमएसटी के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे, जिनमें एससीटीआईएमएसटी की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. कविता राजा, बीएमटी विंग के प्रमुख डॉ. हरिकृष्ण वर्मा, एससीटीआईएमएसटी के डीन डॉ. श्रीनिवासन के., एससीटीआईएमएसटी के उप निदेशक डॉ. मणिकंदन एस., एससीटीआईएमएसटी के कार्डियोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. नारायणन नंबूदरी के.के., बीएमटी विंग के एसोसिएट हेड इंजीनियर मुरलीधरन सी.वी. शामिल थे। सभी ने उपस्थित लोगों को संबोधित किया और बेहतर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपने व्यावहारिक संदेश साझा किए। उनके शब्दों ने प्रतिभागियों को प्रेरित किया और इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

विश्व सामाजिक कार्य दिवस 2025 (एससीटीआईएमएसटी) और सरकारी जनजातीय एल.पी. स्कूल, थलाथुथाकावु, विथुरा, तिरुवनंतपुरम में आयोजित आउटरीच कार्यक्रम

एससीटीआईएमएसटी के चिकित्सा सामाजिक कार्य (एमएसडब्ल्यू) प्रभाग ने 18 मार्च, 2025 को अस्पताल विंग में विश्व सामाजिक कार्य दिवस (डब्ल्यूएसडब्ल्यूडी) मनाया और विथुरा के थलथुथाकावु स्थित सरकारी आदिवासी एल.पी. स्कूल में एक आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया। इस वर्ष का विषय था: "स्थायी कल्याण के लिए अंतर-पीढ़ीगत एकजुटता को सुदृढ़ बनाना", जो मजबूत समाजों के निर्माण, पर्यावरण को बनाए रखने और बेहतर भविष्य के लिए ज्ञान साझा करने हेतु सभी पीढ़ियों की देखभाल और सम्मान के महत्व पर ज़ोर देता है। इस कार्यक्रम में अस्पताल विंग में एक संवेदीकरण कार्यक्रम और पोस्टर प्रदर्शनी और विथुरा में एक आउटरीच कार्यक्रम शामिल था।

अस्पताल विंग में संवेदीकरण कार्यक्रम (18 मार्च 2025) संवेदीकरण कार्यक्रम का उद्देश्य एससीटीआईएमएसटी में उपलब्ध सामाजिक कार्य सेवाओं के बारे में रोगियों और देखभालकर्ताओं को संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना था। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती रोसम्मा मैनुअल (वैज्ञानिक अधिकारी, एमएसडब्ल्यू) द्वारा विश्व सामाजिक कार्य दिवस के विषय और व्यक्तिगत, सामुदायिक और वैश्विक स्वास्थ्य की सुरक्षा और संवर्धन में इसके महत्व पर एक परिचयात्मक व्याख्यान के साथ हुई। वक्ताओं ने विभिन्न कल्याणकारी सेवाओं, विभिन्न विभागों में चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका और बेहतर उपचार परिणाम सुनिश्चित करने के लिए रोगियों और देखभालकर्ताओं के लिए उपलब्ध विशिष्ट सेवाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम ने रोगियों और देखभालकर्ताओं को चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत करने और रोगी देखभाल और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में अपनी शंकाओं को दूर करने में मदद की। संवेदीकरण कार्यक्रम में कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी और कार्डियक सर्जरी के प्रतीक्षा क्षेत्र शामिल थे। श्रीमती श्रीलक्ष्मी आर.एस. (एमएसडब्ल्यू), श्रीमती रेखा एम. (एमएसडब्ल्यू) और डॉ. रेम्या एम. (एमएसडब्ल्यू) ने संवेदीकरण कार्यक्रम का नेतृत्व किया।

अस्पताल विंग में पोस्टर प्रदर्शनी (18 मार्च 2025) अस्पताल के ब्लॉक 1 और ब्लॉक 2 में सामाजिक कार्य दिवस की थीम पर आधारित पोस्टर प्रदर्शित किए गए। चिकित्सा सामाजिक कार्यकर्ताओं, एमएसडब्ल्यू इंटर्नशिप छात्रों और अन्य विभागों के कर्मचारियों ने अपने अत्यंत जानकारीपूर्ण पोस्टरों के साथ प्रदर्शनी में भाग लिया।

सरकारी जनजातीय एल.पी. स्कूल, थलथुथाकावु, विथुरा में आउटरीच कार्यक्रम। (06 अप्रैल, 2025 को) सरकारी जनजातीय एल.पी. स्कूल, थलथुथाकावु, एससीटीआईएमएसटी से 40 किमी दूर पश्चिमी घाट के घने वन क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र विथुरा ग्राम पंचायत के मनाली वार्ड के अंतर्गत आता है, जहाँ अधिकांशतः आदिवासी आबादी रहती है। आउटरीच कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों, अभिभावकों और आम जनता को स्वास्थ्य और कल्याण, नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ अभियान और एससीटीआईएमएसटी में उपलब्ध सेवाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना था। उद्घाटन सत्र कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद एक उद्घाटन सत्र हुआ। श्रीमती मंजूषा जी. आनंद (अध्यक्ष, विथुरा पंचायत) ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने मनाली जैसे भौगोलिक और सामाजिक रूप से अलग-थलग समुदायों में स्वास्थ्य संबंधी आउटरीच कार्यक्रम आयोजित करने के महत्व पर प्रकाश डाला। सत्र की अध्यक्षता श्रीमती रोसम्मा मैनुअल (वैज्ञानिक अधिकारी, एमएसडब्ल्यू) ने की। श्री जॉर्ज पॉल थलियाथ (मेडिको सोशल वर्कर - बी) ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और सुश्री मिनिमोल एस (आदिवासी विस्तार अधिकारी), सुश्री सुजीता मैथ्यू (आईसीडीएस पर्यवेक्षक), श्री शशिधरन कानी (ऊरु मूप्पन, मनाली) और श्री मनोहरन कानी (अध्यक्ष, वन अधिकार समिति) ने सभी का अभिनंदन किया। कार्यक्रम का समापन श्री शिशिर राज जे. (सामाजिक कार्यकर्ता - सी) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

विश्व हाथ स्वच्छता दिवस 2025 का आयोजन

अस्पताल संक्रमण नियंत्रण इकाई ने नर्सिंग सेवा प्रभाग के सहयोग से 1 से 5 मई तक विश्व हाथ स्वच्छता सप्ताह 2025 मनाया। यह वार्षिक पहल विश्व स्वास्थ्य संगठन के वैश्विक अभियान - जीवन बचाएँ: अपने हाथ साफ़ करें के अनुरूप आयोजित की गई, जो स्वास्थ्य सेवा से जुड़े संक्रमणों को रोकने और रोगी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा सेटिंग्स में एक महत्वपूर्ण अभ्यास के रूप में प्रभावी हाथ स्वच्छता की वकालत करता है।

इस वर्ष का विषय, "**यह दस्ताने हो सकते हैं - यह हमेशा हाथ स्वच्छता है**," एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है किदस्ताने पहनने से उचित हाथ स्वच्छता की आवश्यकता समाप्त नहीं होती है। अभियान ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हाथ स्वच्छता सही समय पर और सही तरीके से की जानी चाहिए, चाहे दस्ताने का उपयोग किया जाए या नहीं, ताकि रोगियों और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों दोनों की सुरक्षा हो सके।सप्ताह के मुख्य आकर्षण कार्यशाला से हुई। सभी नर्सिंग अधिकारियों ने इन सत्रों में भाग लिया, जो संक्रमण की रोकथाम के बारे में जागरूकता और व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए थे। कार्यशाला में विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत प्रस्तुतियों की एक श्रृंखला शामिल थी: बेक्टन डिकिंसन के क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री अजेश एम.जे. द्वारा परिधीय अंतःशिरा कैनुलेशन - सर्वोत्तम प्रथाएँ, जटिलताएँ और संक्रमण प्रबंधन

संक्रमण की रोकथाम और देखभाल बंडल प्रथाओं पर एक दिवसीय व्यापक कार्यशाला की शुरुआत 1 मई 2025 को ऑडिटोरियम 2 में सुबह 8:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक

बेक्टन डिकिंसन के शाखा प्रबंधक, श्री बाबूजी के. द्वारा केंद्रीय लाइन देखभाल और रखरखाव, डॉ. लक्ष्मी नटराजन, पीडीसीसी - अस्पताल संक्रमण नियंत्रण द्वारा वेंटिलेटर से संबंधित निमोनिया (वीएपी) और कैथेटर-संबंधित मूत्र पथ संक्रमण - डॉ. शिल्पा मोहन, पीडीसीसी - अस्पताल संक्रमण नियंत्रण द्वारा देखभाल, प्रतिभागियों ने व्यावहारिक कौशल केंद्रों में भी भाग लिया: परिधीय अंतःशिरा कैनुलेशन और केंद्रीय लाइन सम्मिलन और रखरखाव - श्री अजेश और श्री बाबूजी के नेतृत्व में। महिला मूत्र कैथेटर सम्मिलन और रखरखाव - सुश्री विजयलक्ष्मी जी., नर्सिंग अधिकारी-बी, न्यूरोलॉजी आईसीयू के नेतृत्व में किया और पुरुष मूत्र कैथेटर सम्मिलन और रखरखाव - श्री किरण एस. कुमार, नर्सिंग अधिकारी-बी, कार्डियोलॉजी आईसीयू के नेतृत्व में किया गया।

संक्रमण नियंत्रण मूल्यांकन - एनएबीएच फोकस

2 मई को, विभिन्न विभागों में संक्रमण नियंत्रण प्रथाओं का मूल्यांकन करने के लिए एक संरचित मूल्यांकन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य एनएबीएच मानकों के अनुपालन पर केंद्रित था। इस पहल का उद्देश्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना और उत्कृष्ट प्रदर्शन को मान्यता देना था।

पुरस्कार विजेता:

- सर्वश्रेष्ठ आईसीयू: स्ट्रोक आईसीयू
- सर्वश्रेष्ठ वार्ड: सीएच वार्ड
- सर्वश्रेष्ठ ओटी: कार्डियक सर्जरी ओटी
- सर्वश्रेष्ठ प्रयोगशाला: ब्लड बैंक

1. हाथ स्वच्छता चुनौती

3 मई को, स्वास्थ्य सेवा कर्मचारियों को हाथ स्वच्छता के सर्वोत्तम तरीकों में सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए एक हाथ स्वच्छता चुनौती का आयोजन किया गया। इस आयोजन ने काफ़ी उत्साह पैदा किया और हाथ स्वच्छता प्रोटोकॉल के दैनिक पालन को मज़बूत किया। और हाथ स्वच्छता चैंपियनशिप का पुरस्कार न्यूरोसर्जरी वार्ड को दिया गया।

2. **समापन समारोह और पैनल चर्चा**

यह आयोजन 5 मई को एक समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ। समारोह की शुरुआत चिकित्सा अधीक्षक, माइक्रोबायोलॉजी विभागाध्यक्ष और एचआईसीयू की अध्यक्ष डॉ. कविता राजा के स्वागत भाषण से हुई। इस कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन एससीटीआईएमएसटी के निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने किया। उन्होंने एससीटीआईएमएसटी के संक्रमण नियंत्रण मैनुअल के नवीनतम संस्करण का विमोचन किया और सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और स्मृति चिन्ह वितरित किए। सम्मान भाषण डॉ. मंजू नायर आर, एएमओ, डॉ. हरिकृष्णन, प्रोफेसर और कार्डियोलॉजी विभागाध्यक्ष और श्रीमती निर्मला एम ओ, नर्सिंग अधीक्षक द्वारा दिए गए। इसके बाद एक पैनल चर्चा हुई, जिसका विषय था: "रोगाणुरोधी प्रबंधन नीति के कार्यान्वयन में बाधाएँ और आगे का रास्ता"। संचालक: डॉ. अरविंद, प्रमुख - संक्रामक रोग, एमसीएच टीवीएम और पैनलिस्टों में शामिल थे: डॉ. प्रशांत कुमार दाश, प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, एनेस्थिसियोलॉजी, डॉ. विवेक वी. पिल्लई, प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, सीवीटीएस, डॉ. सजीथ एस., प्रोफेसर, न्यूरोलॉजी और डॉ. जॉर्ज सी. विलानिलम, प्रोफेसर, न्यूरोसर्जरी। यह चर्चा नैदानिक स्थितियों में रोगाणुरोधी प्रबंधन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सुधार के लिए अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक सुझावों से भरपूर थी।

समारोह का समापन श्रीमती प्रीना वी., संक्रमण नियंत्रण नर्स द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिन्होंने सभी प्रतिभागियों, वक्ताओं और आयोजक सदस्यों के समर्पण और योगदान को स्वीकार किया। सप्ताह के दौरान आयोजित गतिविधियों की श्रृंखला ने केंद्रीय संदेश पर सफलतापूर्वक जोर दिया: हाथ की स्वच्छता गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा का मूल है।

विश्व रक्तदाता दिवस 2025, एससीटीआईएमएसटी

एससीटीआईएमएसटी के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग ने 14 जून, 2025 को एससीटीआईएमएसटी के पूजापुरा परिसर में विश्व रक्तदाता दिवस 2025 मनाया, जिसमें सुरक्षित रक्ताधान के लिए 100% स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने हेतु एक प्रतिज्ञा-संचालित कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत हाल ही में हुए विमान दुर्घटना के पीड़ितों के लिए एक मिनट के मौन के साथ हुई, जिसके बाद ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के जूनियर रेजिडेंट डॉ. शौविक बसु ने प्रार्थना की। रक्त केंद्र के एमएसडब्ल्यू श्री जॉर्ज पॉल थलियाथ ने सभा का स्वागत किया। ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग की अतिरिक्त प्रोफेसर डॉ. अमिता आर ने इस दिवस के उत्सव के इतिहास और महत्व के बारे में बताया।

एससीटीआईएमएसटी की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. कविता राजा ने अध्यक्षीय भाषण दिया। मुख्य अतिथि सुश्री मेरिन जोसेफ आईपीएस, अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक, पुलिस मुख्यालय, तिरुवनंतपुरम थीं, जिन्होंने स्वैच्छिक रक्तदान आंदोलन को मज़बूत करने में नागरिक ज़िम्मेदारी और सामुदायिक भागीदारी के महत्व पर ज़ोर दिया।

एक औपचारिक शपथ समारोह में प्रतिभागियों ने नियमित स्वैच्छिक रक्तदान और जागरूकता निर्माण के लिए प्रतिबद्धता जताई। समारोह के दौरान लगभग 54 रक्तदान शिविर आयोजकों और रक्तदाताओं को सम्मानित किया गया। स्वैच्छिक रक्तदान कार्यक्रम को बनाए रखने में उनके योगदान को डॉ. सौम्या रामनन वी, अतिरिक्त प्रोफेसर, कार्डियोवैस्कुलर और थोरेसिक सर्जरी विभाग, डॉ. सचिन जे. शेनॉय, वैज्ञानिक जी, इन-विवो मॉडल और परीक्षण विभाग, बीएमटी विंग, एससीटीआईएमएसटी और हमारे नियमित संपूर्ण रक्त और एफेरेसिस दाता श्री कृष्णमूर्ति बी, हमारे नियमित रक्तदाता से रक्तदान शिविर आयोजक द्वारा सम्मानित किया गया।

इस दिन रक्तदान शिविर आयोजकों से फीडबैक सुनने के लिए एक केंद्रित समूह चर्चा भी हुई, कार्यक्रम का संचालन ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के जूनियर रेजिडेंट्स डॉ. मीथु मुरलीधरन, डॉ. भुवनेश्वरी एस और डॉ. मोरला भाव्या श्री ने किया।

न्यूरोक्रिटिकल केयर पर राज्य स्तरीय सम्मेलन

एक नर्सिंग संशोधन 2025 "न्यूरोक्रिटिकल केयर - एक नर्सिंग संशोधन 2025" पर राज्य स्तरीय सम्मेलन 28 जून 2025 को एएमसीएचएसएस सभागार, एससीटीआईएमएसटी में आयोजित किया गया था। इसका आयोजन नर्सिंग सेवा प्रभाग द्वारा व्यापक न्यूरोइंटेंसिव केयर प्रोग्राम, न्यूरोलॉजी विभाग, एससीटीआईएमएसटी के सहयोग से किया गया था। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य नर्सिंग पेशेवरों को न्यूरोक्रिटिकल केयर में नवीनतम उपचार पद्धतियों से अवगत कराना और न्यूरोलॉजिकल आपात स्थितियों के प्रबंधन में आलोचनात्मक सोच और नैदानिक निर्णय को बढ़ाना था। सम्मेलन का उद्घाटन एससीटीआईएमएसटी में न्यूरोलॉजी की प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. आशालता आर. ने किया। नर्सिंग अधीक्षक श्रीमती निर्मला एम.ओ. ने समारोह की अध्यक्षता की। उप नर्सिंग अधीक्षक श्रीमती लीना आर.के. ने स्वागत किया। व्यापक न्यूरोइंटेंसिव केयर प्रोग्राम की प्रोफेसर और प्रभारी डॉ. साजिथ एस. और नर्सिंग की वरिष्ठ व्याख्याता श्रीमती सुजा राज एल. ने कार्यक्रम का संचालन किया। वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी श्रीमती तिशा के. विजयन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में केरल के विभिन्न अस्पतालों और नर्सिंग कॉलेजों की लगभग 250 नर्सों ने भाग लिया। वैज्ञानिक सत्रों में समकालीन विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया गया, जिसमें न्यूरोइंटेंसिव केयर के मूल सिद्धांत, उन्नत वेंटिलेटरी सपोर्ट, औषधीय दृष्टिकोण, इम्यूनोथेरेपी और जटिल न्यूरोलॉजिकल आपात स्थितियों का प्रबंधन शामिल था। इन व्याख्यानों ने देखभाल के व्यावहारिक पहलुओं पर जोर दिया और प्रतिभागियों को चुनौतीपूर्ण नैदानिक परिदृश्यों को आत्मविश्वास के साथ संभालने के लिए तैयार किया।

चिकित्सीय प्लाज़्माफेरेसिस पर एक पैनल चर्चा में विशेषज्ञों और अभ्यासरत नर्सों ने न्यूरोक्रिटिकल केयर में इस महत्वपूर्ण हस्तक्षेप की भूमिका पर विचार-विमर्श

यह चर्चा अत्यधिक संवादात्मक रही और इसने गहन देखभाल सेटिंग्स में नैदानिक निर्णय लेने, रोगी निगरानी और टीम वर्क के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की। दोपहर के सत्रों में उभरते तंत्रिका संबंधी विकारों, ऑटोइम्यून एन्सेफलाइटिस, तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाले दुर्लभ संक्रमणों और तंत्रिका-पुनर्वास के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इन सत्रों ने गंभीर रूप से बीमार तंत्रिका संबंधी रोगियों के तीव्र और दीर्घकालिक प्रबंधन, दोनों पर प्रतिभागियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया। एक आकर्षक प्रश्नोत्तरी सत्र ने शैक्षणिक कार्यवाही में प्रतिस्पर्धात्मक भावना का संचार किया और प्रतिभागियों के ज्ञान का जीवंत तरीके से परीक्षण किया। उत्साह और सक्रिय भागीदारी ने निरंतर सीखने के लिए नर्सिंग बिरादरी की प्रतिबद्धता को दर्शाया। समारोह के समापन समारोह ने कार्यक्रम के सफल समापन को चिह्नित किया। सम्मेलन ने न्यूरोक्रिटिकल केयर में अद्यतन ज्ञान और कौशल के साथ नर्सिंग समुदाय को समृद्ध करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त किया और प्रतिभागियों द्वारा इसकी व्यापक रूप से सराहना की गई।

माइक्रोविजन 2025

एससीटीआईएमएसटी के एप्लाइड बायोलॉजी विभाग ने 09-10 सितंबर 2025 को माइक्रोस्कोपी और इमेज एनालिसिस पर माइक्रोविजन 2025: 2 दिवसीय कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम को डीएसटी-एसईआरबी द्वारा वित्त पोषित किया गया और इनबायोटेक के तकनीकी सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन एससीटीआईएमएसटी के निदेशक प्रोफेसर संजय बिहारी ने डॉ एच के वर्मा, बीएमटी विंग के प्रमुख, इंजीनियर सी वी मुरलीधरन, एसोसिएट हेड, डॉ अनिलकुमार टीवी, एप्लाइड बायोलॉजी विभागाध्यक्ष, डॉ अनुज्ञा भट्ट, डॉ रंजीत पी नायर की उपस्थिति में किया। अन्य सम्मानित संकाय सदस्य, डॉ रॉय जोसेफ, डॉ जयश्री आरएस, डॉ रेखा एमआर, डॉ लिंडा वी थॉमस, डॉ शाइनी वी भी उद्घाटन के लिए उपस्थित थे

शैक्षणिक सत्रों में एससीटीआईएमएसटी के ऊतक संवर्धन विभाग के डॉ. अनिलकुमार पी.आर. और डॉ. नरेश कासोजू सहित प्रख्यात संकाय सदस्यों ने व्याख्यान दिए। इसके अतिरिक्त, इनबायोटेक के श्री सी.वी. अजित कुमार और श्री जयकुमार के. ने व्याख्यान और प्रदर्शन आयोजित किए, जिससे प्रतिभागियों को सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक विशेषज्ञता दोनों प्राप्त हुई।

दो दिनों की कार्यशाला में माइक्रोस्कोपी के मूल सिद्धांत, विभिन्न प्रकार के इमेजिंग कैमरे, इमेजजे सॉफ्टवेयर का उपयोग करके छवि विश्लेषण जैसे विविध विषयों पर चर्चा की गई। वैज्ञानिक प्रकाशनों के लिए उपयुक्त चित्र तैयार करने पर विशेष जोर दिया गया। कार्यक्रम में माइक्रोस्कोपी पर व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र भी शामिल थे, जिससे प्रतिभागियों को उपकरण संचालन और छवि अधिग्रहण का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

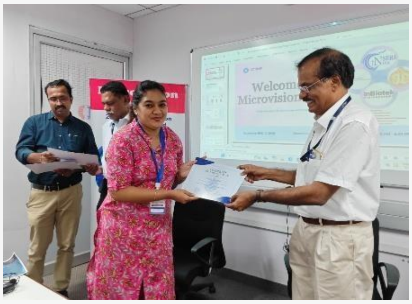

सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, अंतिम दिन एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका प्रतिभागियों ने भरपूर स्वागत किया और सीखने के अनुभव को एक जीवंत आयाम प्रदान किया। कार्यशाला का समापन एक समापन समारोह के साथ हुआ, जिसमें सभी प्रतिनिधियों को उनकी भागीदारी के सम्मान में प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। कुल मिलाकर, माइक्रोविज़न 2025 को प्रतिभागियों द्वारा अत्यधिक सराहा गया। इसने माइक्रोस्कोपी और छवि विश्लेषण में कौशल बढ़ाने, संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने और एससीटीआईएमएसटी में उच्च-गुणवत्ता वाले अनुसंधान की संस्कृति को मजबूत करने के लिए एक मूल्यवान मंच प्रदान किया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों का सशक्तिकरण

प्रतिभागी: स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी स्तर के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवार और परियोजना कर्मचारी

फ़ोकस: जैव चिकित्सा विज्ञान में हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए पहुँच और जागरूकता के अंतर को पाटना और एसटीईएम में भागीदारी को बढ़ावा देना।

3. **संकाय सदस्यों के लिए जागरूकता कार्यक्रम (5** मार्च 2025)

प्रतिभागी: केरल भर के स्कूलों और कॉलेजों के संकाय सदस्य
फ़ोकस: शिक्षकों को हाल की प्रगति से अवगत कराना ताकि वे छात्रों को जैव चिकित्सा विज्ञान में अनुसंधान और करियर के अवसरों के लिए मार्गदर्शन कर सकें।

समावेशिता और लक्षित सशक्तिकरण

कार्यशाला श्रृंखला की एक प्रमुख विशेषता इसका श्रोता-विशिष्ट डिज़ाइन था। इस लक्षित दृष्टिकोण ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक समूह को उनकी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप प्रासंगिक और प्रभावशाली सामग्री प्राप्त हो।

- छात्राओं को को एसटीईएम में लिंग-आधारित बाधाओं को दूर करने के लिए सशक्त बनाया गया।
- एससी/एसटी प्रतिभागियों को समावेशी प्रोग्रामिंग और मार्गदर्शन के माध्यम से समर्थन दिया गया।
- संकाय सदस्यों को को एसटीईएम शिक्षा में बदलाव के उत्प्रेरक बनने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान किए गए।

जैव चिकित्सा नवाचारों पर एक दिवसीय कार्यशालाओं पर एक व्यापक रिपोर्ट - जागरूकता के माध्यम से सशक्तिकरण

श्री चित्रा तिरुनल आयुर्विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), तिरुवनंतपुरम ने राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत (एनएएसआई) - केरल चैप्टर के सहयोग से सितंबर 2024 और मार्च 2025 के दौरान जैव चिकित्सा नवाचारों पर तीन एक दिवसीय कार्यशालाओं की श्रृंखला का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इन कार्यशालाओं को जागरूकता कार्यक्रमों के रूप में डिज़ाइन किया गया था, जिनका उद्देश्य विशिष्ट लक्षित समूहों - महिला छात्रों, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों और संकाय सदस्यों - को जैव चिकित्सा विज्ञान, नवाचार प्रवृत्तियों और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और चिकित्सा (एसटीईएम) में करियर पथों की समझ बढ़ाकर सशक्त बनाना था। प्रत्येक कार्यशाला को प्रतिभागियों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया गया था, जिसमें जैव चिकित्सा क्षेत्रों में समावेशिता, जागरूकता और सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए विशेषज्ञ वार्ता, इंटरैक्टिव सत्र और विशेष प्रयोगशाला दौरों का मिश्रण प्रस्तुत किया गया था।

- **कार्यशाला श्रृंखला के उद्देश्य**
- **तीनों कार्यशालाओं के मुख्य लक्ष्य थे:**
- **कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों और शिक्षकों के बीच जैव चिकित्सा नवाचारों में ज्ञान की खाई को पाटना।**
- **एसटीईएम क्षेत्रों में विविधता, समावेशिता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।**
- **जैव चिकित्सा विज्ञान में करियर और शैक्षणिक अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करना।**
- **एससीटीआईएमएसटी की अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं के भ्रमण के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना।**

कार्यशाला सारांश

महिला छात्राओं का सशक्तिकरण
दिनांक: 27 सितंबर 2024
प्रतिभागी: 50 छात्राएँ (10+2, स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी), परियोजना कर्मचारी
फ़ोकस: जागरूकता, मार्गदर्शन और जैव चिकित्सा अनुसंधान के संपर्क के माध्यम से युवा महिलाओं को एसटीईएम करियर अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

श्री चित्रा संस्थान में आयोजित अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों का सशक्तिकरण कार्यकर्म: प्रतिक्रिया और परिणाम

इन कार्यक्रमों ने प्रतिभागियों की जैव चिकित्सा विज्ञान की समझ को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया और को एसटीईएम के क्षेत्रों में उनकी रुचि को बढ़ाया। तीनों कार्यशालाओं में प्रतिभागियों से एकत्रित संरचित प्रतिक्रिया से पता चला: (i) सामग्री की गुणवत्ता, वक्ता विशेषज्ञता और कार्यक्रम संरचना के बारे में अत्यधिक सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ, (ii) प्रतिभागियों ने कार्यशालाओं को अत्यधिक जानकारीपूर्ण, प्रेरक और करियर-सक्षम पाया, और (iii) कई लोगों ने भविष्य में निरंतर जुड़ाव और इसी तरह के कार्यक्रमों की तीव्र इच्छा व्यक्त की।

स्मृतिवनम् वृक्षारोपण समारोह 2025

स्मृतिवनम एक सार्थक पहल है जहाँ सेवानिवृत्त कर्मचारी अपने स्थायी योगदान के प्रतीक के रूप में बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग परिसर में एक पौधा लगाते हैं। यह परंपरा न केवल उनकी सेवा का सम्मान करती है, बल्कि व्यक्ति और संस्थान के बीच एक गहरा संबंध भी स्थापित करती है। समय के साथ, ये पेड़ एक हरे-भरे क्षेत्र में विकसित होते हैं, जो संगठन के लिए समर्पित लोगों की जीवंत स्मृति का निर्माण करते हैं। स्मृतिवनम स्थिरता, पर्यावरणीय जागरूकता और एक ऐसी विरासत को बढ़ावा देता है जिसे आने वाली पीढ़ियाँ संजोकर रख सकें। इस वर्ष, "स्मृतिवनोत्सव"—एक ऐसा कार्यक्रम जहाँ सेवानिवृत्त कर्मचारी पौधे लगाते हैं और पूर्व प्रतिभागी पुनः मिलते हैं—18 फरवरी, 2025 को आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. संजय बिहारी ने की।

कार्यक्रम के दौरान, वझुथाकाडु स्थित राजकीय महिला महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या डॉ. टी.आर. जयकुमारी को स्मृतिवनम समिति के मार्गदर्शन के लिए सम्मानित किया गया। परियोजना में उनके योगदान की अत्यंत सराहना की गई।

डॉ. संजय बिहारी और प्रख्यात वनस्पतिशास्त्री डॉ. टी.आर. जयकुमारी ने संयुक्त रूप से एक तितली रजिस्ट्री का उद्घाटन किया। इस रजिस्ट्री में बीएमटी विंग के तितली उद्यान में खींची गई 32 तितलियों की तस्वीरें शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि 26 तितलियों की पहचान प्रसिद्ध पर्यावरणविद् और विपुल लेखक श्री आर. विनोद कुमार ने की, जबकि तस्वीरें श्री साजिन राज आर.जी. स्मृतिवनम परियोजना की रीढ़, बागवानों और एस्टेट कर्मचारियों को भी उनके समर्पण के लिए सम्मानित किया गया। इस पहल की सफलता के लिए उनकी कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता के लिए उन्हें आभार के प्रतीक चिन्ह भेंट किए गए।

कार्यक्रम की शुरुआत तेरह फलदार वृक्षों के रोपण से हुई, जिनमें से प्रत्येक वृक्ष एक सेवानिवृत्त कर्मचारी द्वारा लगाया गया। वृक्षारोपण समारोह के बाद, सेवानिवृत्त कर्मचारियों के प्रतिनिधियों ने भाषण दिए, आभार व्यक्त किया और संगठन में अपने अनुभवों पर विचार किया। उनके शब्दों ने कार्यक्रम में एक व्यक्तिगत स्पर्श जोड़ा, जिससे यह और भी यादगार बन गया।

समारोह का समापन एक फोटोग्राफी सत्र के साथ हुआ, जिसमें इस अवसर को कैद किया गया और उसके बाद एक चाय पार्टी का आयोजन किया गया। स्मृतिवनम परियोजना इस बात की एक महत्वपूर्ण याद दिलाती है कि कैसे छोटे-छोटे कार्य सामूहिक रूप से एक हरित और अधिक टिकाऊ भविष्य के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी: स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों के लिए ज्ञान का केंद्र

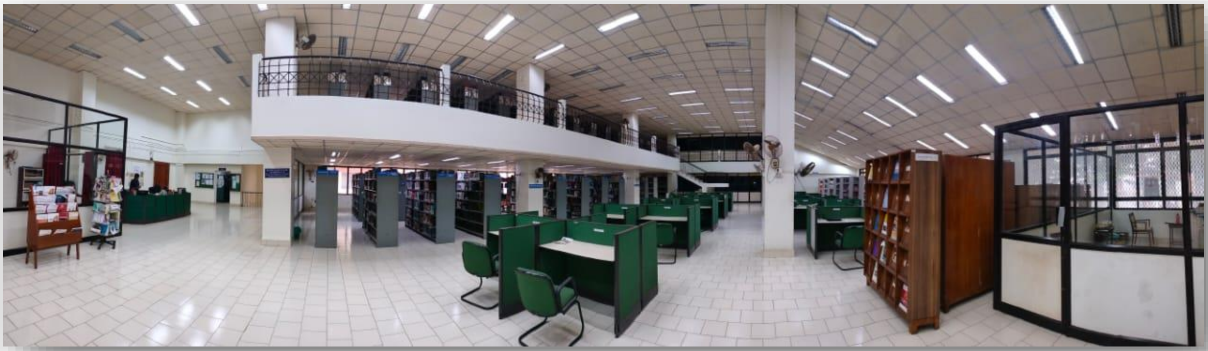

एससीटीआईएमएसटी की मेडिकल लाइब्रेरी, संस्थान के शैक्षिक और अनुसंधान कार्यक्रमों को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तिरुवनंतपुरम, केरल में स्थित, एससीटीआईएमएसटी एक प्रसिद्ध संस्थान है जो चिकित्सा विज्ञान और प्रौद्योगिकी को एक साथ जोड़कर अनुसंधान और चिकित्सा शिक्षा को बढ़ावा देता है। एससीटीआईएमएसटी की लाइब्रेरी चिकित्सा, स्वास्थ्य देखभाल और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में छात्रों, संकाय, स्वास्थ्य पेशेवरों और शोधकर्ताओं के लिए एक अनमोल संसाधन के रूप में कार्य करती है।

एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी की प्रमुख विशेषताएँ: व्यापक संसाधन संग्रह: एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी में चिकित्सा विज्ञान, स्वास्थ्य देखभाल, और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तकें, जर्नल और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का विशाल संग्रह है। इसमें पाठ्यपुस्तकें, शोध पत्र, थिसिस और रिपोर्ट शामिल हैं, जो छात्रों और पेशेवरों के लिए आवश्यक हैं। लाइब्रेरी का संग्रह कार्डियोलॉजी, न्यूरोलॉजी, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, सर्जरी और अन्य क्षेत्रों में विस्तृत है, जिससे यह शोध और अध्ययन के लिए एक आवश्यक संसाधन बन जाती है।

ऑनलाइन और डिजिटल संसाधन: लाइब्रेरी ऑनलाइन और डिजिटल संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है, जिसमें ई-जर्नल्स, डेटाबेस, और ऑनलाइन मेडिकल लाइब्रेरी शामिल हैं। ये संसाधन उपयोगकर्ताओं को कहीं से भी नवीनतम शोध लेख, क्लिनिकल अध्ययन और चिकित्सा साहित्य तक पहुंचने की सुविधा प्रदान करते हैं। पबमेड, साइंसडायरेक्ट ओर आईईईई एक्सप्लोर जैसे विशेष डेटाबेस तक पहुंच एससीटीआईएमएसटी में छात्रों और शोधकर्ताओं को नवीनतम जानकारी प्राप्त करने में मदद करती है।

अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स तक पहुँच: एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी कई प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा जर्नल्स तक पहुंच प्रदान करती है। इससे शोधकर्ता और चिकित्सा पेशेवर चिकित्सा और स्वास्थ्य देखभाल प्रौद्योगिकियों में वैश्विक विकास पर अद्यतन बने रहते हैं। जर्नल सब्सक्रिप्शन विभिन्न क्षेत्रों में फैले होते हैं, जैसे कि कार्डियोवैस्कुलर मेडिसिन, न्यूरोलॉजी, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, सर्जरी में रोबोटिक्स, और अधिक।

शोध समर्थन और सहयोग: लाइब्रेरी केवल संसाधन प्राप्त करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह सहयोग और ज्ञान साझा करने का भी एक केंद्र है। लाइब्रेरी सक्रिय रूप से अनुसंधान गतिविधियों का समर्थन करती है, जैसे साहित्य समीक्षा, डेटा संग्रहण और संदर्भ प्रबंधन। शोधकर्ता एससीटीआईएमएसटी के पूर्व छात्रों के थिसिस और अन्य शोध प्रकाशनों तक पहुंच सकते हैं, जो उनके काम में सहायक होते हैं।

प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ: एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी नियमित रूप से कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र आयोजित करती है, जिसमें उपयोगकर्ताओं को इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना, संदर्भ प्रबंधन उपकरणों का उपयोग और अन्य शोध संबंधित कौशल सिखाए जाते हैं। ये कार्यशालाएँ छात्रों और संकाय को उनकी सूचना साक्षरता में सुधार करने में मदद करती हैं, जो आधुनिक चिकित्सा और प्रौद्योगिकी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण है।**इंटरलाइब्रेरी लोन सुविधा**: एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी **इंटरलाइब्रेरी लोन सुविधा** भी प्रदान करती है, ताकि उपयोगकर्ता लाइब्रेरी के संग्रह में उपलब्ध नहीं होने वाली पुस्तकों, जर्नल्स और लेखों की मांग कर सकें। यह सुविधा उपयोगकर्ताओं को अन्य लाइब्रेरी नेटवर्क से संसाधन प्राप्त करने का अवसर देती है। **उपयोगकर्ता मित्रवत लाइब्रेरी सेवाएँ**: लाइब्रेरी **ऑनलाइन कैटलॉगिंग सेवाएँ** प्रदान करती है, जिससे उपयोगकर्ता आसानी से पुस्तकों, जर्नल्स और अन्य संसाधनों की खोज कर सकते हैं। लाइब्रेरी का डिजिटल कैटलॉग वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध है, जिससे आवश्यक सामग्री को ढूंढना आसान हो जाता है। इसके अतिरिक्त, लाइब्रेरी में **वाई-फाई** और **कंप्यूटर वर्कस्टेशन्स** की सुविधा भी है, ताकि ऑनलाइन शोध और डेटा तक पहुंच में आसानी हो।

एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएँ: पुस्तक उधार सेवाएँ: एससीटीआईएमएसटी की मेडिकल लाइब्रेरी उपयोगकर्ताओं को पुस्तकों और अन्य संदर्भ सामग्रियों को उधार लेने की सुविधा देती है। यह सेवा छात्रों, संकाय और शोधकर्ताओं के लिए शॉर्ट-टर्म और लॉन्ग-टर्म उपयोग के लिए उपलब्ध है।

डिजिटल संसाधन तक पहुंच: एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी हजारों **ई-जर्नल्स**, **ई-बुक्स**, और अन्य डिजिटल संसाधनों तक पहुंच प्रदान करती है। यह विशेष रूप से चिकित्सा और प्रौद्योगिकी में नवीनतम सामग्री प्राप्त करने के लिए मूल्यवान है। **शोध सहायता**: लाइब्रेरी कर्मचारियों द्वारा शोध पूछताछ में मदद की जाती है, साहित्य खोजने में सहायता की जाती है, और संदर्भ प्रबंधन में सहयोग दिया जाता है। **थिसिस और डिसर्टेशन रिपॉजिटरी**: लाइब्रेरी में एससीटीआईएमएसटी के छात्रों द्वारा लिखी गई थिसिस और डिसर्टेशन का संग्रह किया जाता है, जो चल रहे शोध के लिए एक मूल्यवान संसाधन है। **चिकित्सा डेटाबेस तक पहुंच**: लाइब्रेरी महत्वपूर्ण चिकित्सा डेटाबेस जैसे **PubMed**, **Cochrane Library**, और अन्य तक पहुंच प्रदान करती है, जो साक्ष्य-आधारित चिकित्सा अभ्यास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी एससीटीआईएमएसटी संस्थान के शैक्षिक, शोध और स्वास्थ्य देखभाल पहलों को समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह चिकित्सा पेशेवरों, छात्रों और शोधकर्ताओं को आवश्यक संसाधन प्रदान करती है, जो उनके अध्ययन और शोध क्षमताओं को बढ़ाते हैं। चिकित्सा साहित्य, जर्नल्स और डेटाबेस तक पहुंच प्रदान करके, लाइब्रेरी यह सुनिश्चित करती है कि एससीटीआईएमएसटी चिकित्सा शिक्षा और प्रौद्योगिकी में अग्रणी बना रहे। चाहे वह शैक्षिक अध्ययन हो, नैदानिक अभ्यास हो, या चिकित्सा प्रौद्योगिकी में अत्याधुनिक शोध हो, एससीटीआईएमएसटी मेडिकल लाइब्रेरी एक महत्वपूर्ण संसाधन है जो संस्थान के उद्देश्य को बढ़ावा देती है, जिसका लक्ष्य भारत और उससे बाहर स्वास्थ्य देखभाल और प्रौद्योगिकी में प्रगति करना है।

लाइब्रेरियन एवं दस्तावेज़ीकरण, सहायक, पुस्तकालय, रेशमा जॉन

कन्याकुमारी ग्लास ब्रिज द्वारा विवेकानंद स्मारक शिला एवं थिरुवल्लुवर प्रतिमा को जोड़ने वाला अथक प्रयास: समुद्र के ऊपर रोमांचक पैदल चहल कदमी

कन्याकुमारी (केप कोमोरिन) तमिलनाडु राज्य में स्थित भारत का सबसे दक्षिणी छोर है जो अपनी कला एवं सांस्कृतिक विरासत को संजोये, समुद्र के बीचोबीच स्थापित विवेकानंद स्मारक शिला एवं थिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा, मनोरम सूर्योदय और सूर्यास्त बिंदु आदि की बदौलत हमेशा से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। इसके अलावा कन्याकुमारी को त्रिवेणी संगम के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह भारत का एकमात्र स्थान है जहाँ पर अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर, तीनो सागर एक साथ विलीन हो जाते है। हाल ही में, कन्याकुमारी को भारत में प्रथम ग्लास ब्रिज के कारण एक बार फिर से सुर्खियों में आने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है जिसे सैलानी गण बहुत पसंद कर रहे है। इस लेख में तीन विषयो पर, यानी ग्लास ब्रिज की विशेषता एवं प्रयोजन, विवेकानंद स्मारक शिला एवं थिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास रहेगा।

विश्व में ग्लास ब्रिज हमेशा से नयी प्रौद्योगिकी विकास का आयना बन कर गगनचुम्बी इमारतों में या समद्र के ऊपर अपना जादू दिखा कर नवीनतम रोमांचकारी अनुभव देते रहे है। कन्याकुमारी का यह ग्लास ब्रिज ३७ करोड़ रुपये की लागत से निर्मित पुल है जोकि ७७ मीटर लंबा और १० मीटर चौड़ा है, जिसमें २.५ मीटर चौड़ा ग्लास फ्लोर है। इस फुटओवर ब्रिज द्वारा पर्यटक विवेकानंद स्मारक शिला और थिरुवल्लुवर प्रतिमा के बीच की दूरी को समुद्र के ऊपर पैदल चल कर पार करने के लिए बनाया गया है। श्री एम के स्टालिन (मुख्यमंत्री, तमिलनाडु राज्य) ने इस फाइबर ग्लास पुल का उद्घाटन ३० दिसंबर २०२४ को किया था। ब्रिज के बनने से अब पर्यटक कन्याकुमारी के तट पर विवेकानंद रॉक मेमोरियल से सीधे तिरुवल्लुवर प्रतिमा तक पैदल चल कर पहुंच सकते हैं। इस फाइबर ग्लास कांच के पुल के ऊपर एक धनुषाकार आर्क डिजाइन है जो की शायद ग्लास ब्रिज को तट पर चलने वाली तेज हवा को झेलने और बचाने का कार्य करेगा।

यह खारी हवा के संक्षारक प्रभावों को सहन करने वाला इंजीनियरिंग चमत्कार है। ब्रिज पर चलने से ऐसा लगता है जैसे हम समुद्र पर चल रहे हों। वैसे तो मैंने कनाडा के सी ऍन टावर का आनंद वर्ष २००० में लिया था जो थोड़ा डरावना जरूर लगा था क्योकि ११४ मजिल से ग्लास फ्लोर से नीचे देखना थोड़ा सांसो को रोक देने जैसा रिस्की लगता है। यह मेरी कन्याकुमारी की पिछले दशक में की गयी पांचवी यात्रा थी पर इस बार ग्लास ब्रिज के कारण मेरा अनुभव बहुत ही रोमांचकारी रहा। इस समुद्री ग्लास ब्रिज पर चलना अत्यंत आनंदमयी एवं सुकूनभरा एहसास देने वाला था। सैलानियों की भीड़ इस बात का प्रमाण थी। शाम के समय कन्याकुमारी तट पर वापिस पहुँच कर, समुद्री ग्लास ब्रिज के ऊपर लेसर शो आसमान में रंगो की अदुभुत छटा का जादू लुभावना रहा था।

विवेकानंद स्मारक शिला एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है जिसके आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को जानना बहुत जरुरी है। कहा जाता है कि १८९३ में विश्व धर्म सभा में शामिल होने से पहले विवेकानंद तमिलनाडु के कन्याकुमारी आये थे। यहां पर समंदर के किनारे से लगभग ५०० मीटर दूर पानी के बीच में उन्हें एक विशाल शिला दिखी, जहां तक वो तैरकर पहुंचे और ध्यान मग्न हो गए। समुद्र की विशाल लहरों, उनकी गरजना और बदलते मौसम, कुछ भी उनका ध्यान भंग नहीं कर सके। आखिर में उन्हें अपने जीवन से जुड़े लक्ष्य और उसे पूरा करने के लिए आवश्यक ज्ञान की प्राप्ति हुई। साल १९७० में इस शिला के पास स्वामी विवेकानंद को समर्पित एक भव्य स्मृति भवन का निर्माण किया गया जिसे विवेकानंद स्मारक शिला के नाम से जाना जाता है। लाल रंग के पत्थर से निर्मित स्मारक ७० फुट ऊँची गुंबद और चार मंडप के साथ अजंता-एलोरा की गुफाओं की वास्तुशिल्प कला का आभास दिलाती है। मुख्य भवन के अंदर स्वामी विवेकानंद की साढ़े आठ फुट ऊँची कांसे की बनी एकदम सजीव मूर्ति है। समुद्र की लहरों से घिरी इस स्मारक शिला में पहुंच कर ध्यान कक्ष में शांति से पावन ॐ ध्वनि का का अनुभव करना, इस आधुनिक शोरभरी दुनिया से दूर, एक अभूतपूर्व आध्यात्मिक अनुभव है। इसके अलावा श्रीपाद मंडपम, जोकि विवेकानंद मंडपम के सामने स्थित है, स्वामी विवेकानंद के भगवान शिव से गहरे संबंध का बोध देता है। ऐसा माना जाता है कि समुद्र में स्थित इस चट्टान पर देवी कन्या कुमारी ने भगवान शिव की आराधना करते हुए तप किया था। उन देवी पद चिन्हों को यहां दर्शाया गया है।

कन्याकुमारी का अगला महत्वपूर्ण आकर्षण महान कवि थिरुवल्लुवर की विशाल प्रतिमा है। कवि तिरुवल्लुवर को भारतीय दार्शनिक के रूप में जाना जाता है। उनका लेखन संग्रह तिरुक्कुरल, दोहो में पिरोया हुआ नैतिकता, राजनीतिक, आर्थिक मामलों और प्रेम प्रकाश डालने के साथ साथ आज की समय की हर गूढ़ समस्या का समाधान देने के कारण तमिल में बहुत प्रसिद्ध है। १ जनवरी, २००० को तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री करुणानिधि ने कवि तिरुवल्लुवर की इस १३३ फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया था। २५ वर्ष पश्चात्, एम के स्टालिन सरकार ने ग्लास ब्रिज प्रोजेक्ट के उद्घाटन के साथ साथ तिरुवल्लुवर शिला प्रतिमा को बुद्धिमता की मूर्ति (स्टेचू ऑफ़ विजडम) का नामकरण किया।

स्टेचू ऑफ़ विजडम के भीतर घुमावदार सीढ़ियों चढ़ कर कवि तिरुवल्लुवर के चरणों में बैठकर, खुले आसमान के आँचल में और नीचे समुद्र की शीतल लहरों के प्रवाह के महसूस कर, इस ग्लास ब्रिज यात्रा द्वारा दिव्य विवेकानंद स्वामी जी के दिए जीवन मूल्यों का आत्मसार और साक्षात्कार करना एक अविस्मरणीय जीवंत अनुभव रहा। इसके पश्चात् हमने विवेकानंद केंद्र के लिए प्रस्थान किया जहाँ पर योग शास्त्र समागम में विशेष अतिथि स्वामी निरंजनानंद सरस्वती जी (बिहार योग विद्यालय, मुंगेर) के अनमोल वैदिक व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। स्वामी निरंजनानंद ने योग निद्रा के माध्यम से योगिक और आध्यात्मिक विज्ञानं में पारंगता प्राप्त की हुई है।

कमलेश के गुलिया, पी एच डी
वैज्ञानिक जी एफ प्रभारी, निद्रा अनुसंधान विभाग
बायोमेडिकल टेक्नोलॉजी विंग, सैटलमॉन्ड पैलेस
श्री चित्रा तिरुनाल आयुर्विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम
(भारत सरकार के अधीन राष्ट्रीय महत्व का संस्थान)

****

"विज़न 2047" या "विकसित भारत @2047" सरकार का 2047 में अपनी स्वतंत्रता के 100वें वर्ष तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने का विज़न है। यह व्यापक योजना आर्थिक विकास, समावेशी विकास और सामाजिक प्रगति पर केंद्रित है, जिसके प्रमुख स्तंभों में युवा सशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन, महिलाओं की उन्नति और किसानों को समर्थन शामिल हैं।

चित्रों और सृजन का पर्व

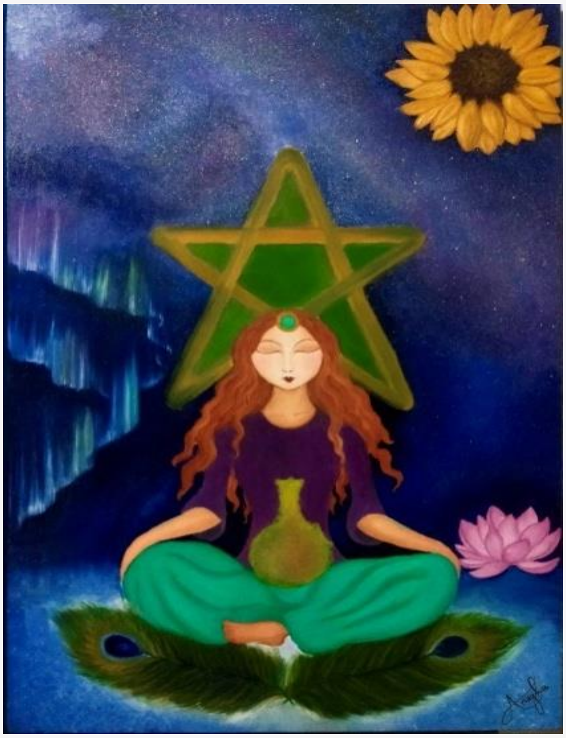

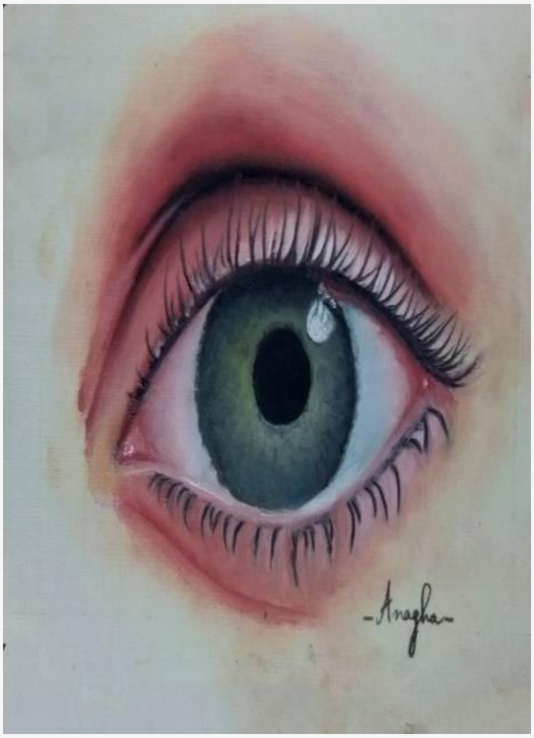

अनघा सुनीलकुमार
पीएचडी (जनवरी सत्र)

हमारे कलाकार द्वारा पेंसिल स्केच

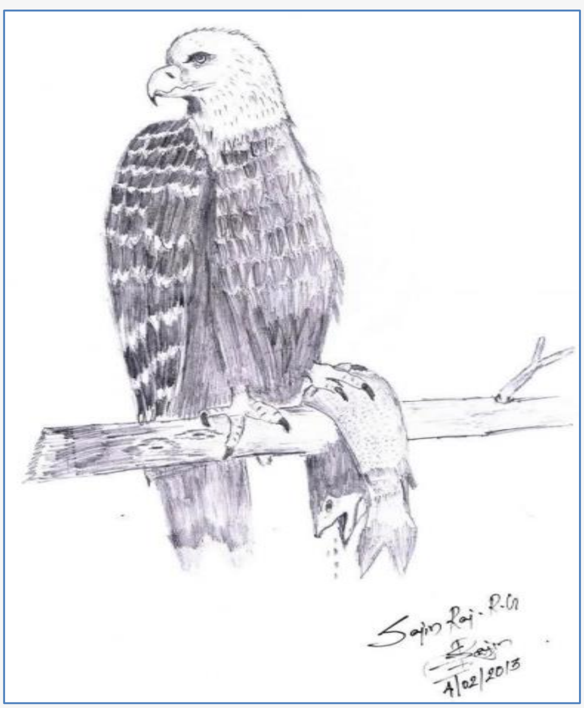

सजिन राज आर.जी.
तकनीकी सहायक (उपकरण)--बी
सिरेमिक कोटिंग सुविधा

स्वस्थ और चहचहाते पक्षी: एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का दर्पण

गांधी नगर, गुजरात की प्रकृतिक वादियों में लाल नैप्ड (गर्दन वाला) आइबिस (स्यूडिबिस पैपिलोसा)/
भारतीय काले आइबिस की फोटोग्राफी

स्वस्थ और चहचहाते पक्षी: एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र का दर्पण

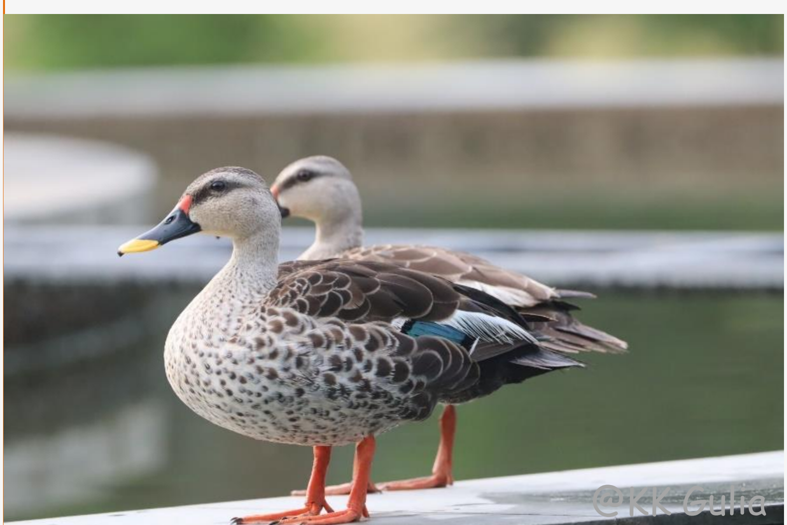

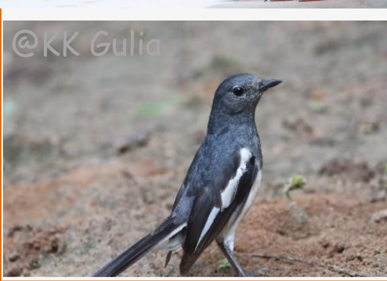

गुजरात की वादियों में पक्षियों के प्रकृति में आनंदमयी विचरण का स्थिर छायाचित्रण

फलेज्लिंग पक्षी: जीवन की अगली उड़ान के लिए त्यार

स्थिर विषय छायाचित्रण: डॉ कमलेश के गुलिया

गर्भावस्था से मातृत्व तक का सफर

एक नन्ही जान मेरे भीतर
धीरे धीरे बढ़ने लगी
हर धड़कन उसकी सुनती हूँ
माँ बनने का सपना बुनती हूँ!

कभी डर लगता आंखें भींग जाती
कभी खुशी से दुनिया भूल जाती
अकेले में पेट पर हाँथ फिरती
सब ठीक हे ना खुद से पूच जाती

शरीर बदलता हर दिन कुछ ओर
मगर मन में चलती एक अनजानी
शोर
अजीब सी थकान मन भारी भारी
फिर भी उम्मीदों की किलकारी

अब नींद कम आती हे मगर
उसके चहरे पर सुकून हर डर
फिर भी प्यार से भर जाता हे सीना
माँ बनना सच में सबसे हसीन
सपना

हर महिला की ये अपनी कहानी
आँसू ,हसी और बहुत
सारी कुर्बानी
पर ममता की गहराई में खो जाने
का
मौका सबको नहीं मिलता ,ये
भगवान का तोफा अनमोल -----

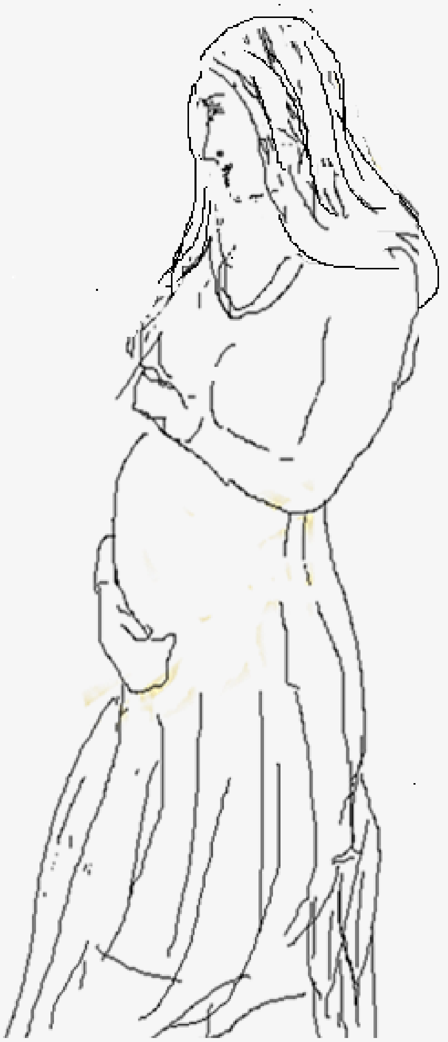

श्वेता उनियाल (डॉ.)
सार्वजनिक स्वास्थ्य में स्नातकोत्तर (एमपीएच)

मेरी बिटिया

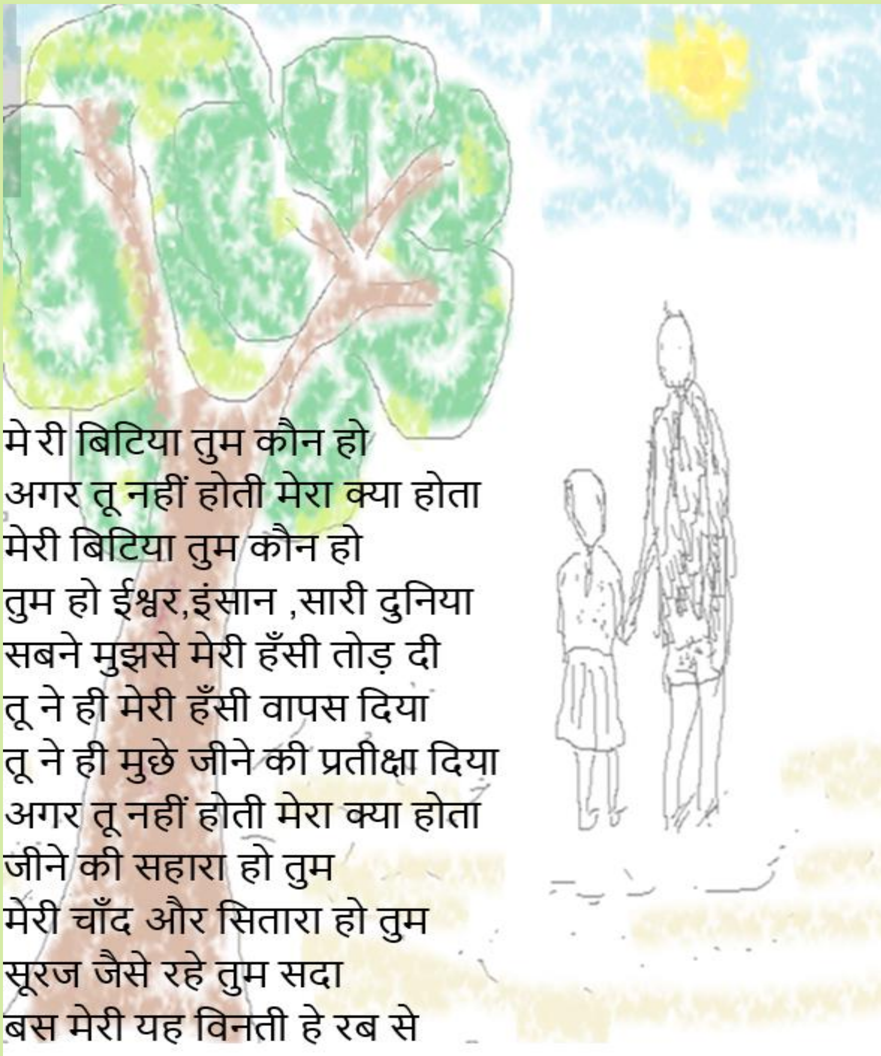

दीपा एल.एस.
कार्यकारी सहायक – बी
वित्त एवं लेखा प्रभाग

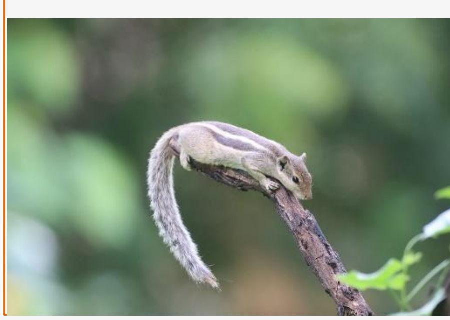

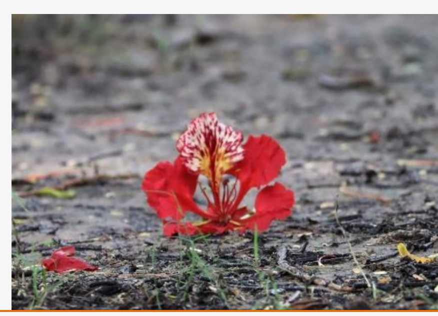

बुढापे का सच

कावेरी बी.एस.
उच्च श्रेणी लिपिक-बी
वित्त एवं लेखा प्रभाग

इस साल गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मुछे त्रिवंतपुरम के थम्पानूर में स्तिथ एक वृदाश्रम "वंजी पुअर फण्ड,अम्मवीडू" में जाने का एक सुनहरा अवसर मिला। वंजी पुअर फण्ड ,अम्मवीडू एक मशहूर, गैर लाभकारी वृदाश्रम है, जिसका स्थापना सर सी पी रामास्वामी अय्यर द्वारा 1941 में किया गया। यह फण्ड द्वितीय विश्व युद्ध के समय त्रावणकोर के छात्रो को शिक्षा के साथ भोजन भी उपलब्ध कराने की मकसद से किया गया था। मगर अब यह घर केवल बुजुर्ग महिलाओं के लिए एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान करता हैं ,जिनके देखभाल करने वाले कोइ नहीं है।

इस घर का मक़सद केवल लाभ कामना नहीं है, बल्कि इसके निवासियों की भलाई और आराम सुनिश्चित करना है। इस घर में कुल मिलाकर बीस मायें है ,जो हसीं खुशी वहां पर मिलजुलकर रहती है। वहाँ की वृद्धाश्रम की अधिकारियों ने उन्हें साफ सुधरी, पोशक, स्वस्थ भोजन और उनकी मानसिक स्वास्थ्य सुधार लाने की सभी सुविधाएँ प्रदान की है। रोज उनसे योगा भी कराते है।

मैं सुबह ही वहाँ जाकर उन्हें नाश्ता परोसकर दिया और उनके साथ मिलकर नाश्ता भी खाया। वह मेरे लिए एक यादगार अनुभव था क्योंकि, मैंने हाल ही मैं अपने माँ को खोया था.। नाश्ते के बाद मैंने कुछ माओं से बात की तब मुझे पता चला कि बुढ़ापे में मौत का दूर किसी भी नहीं है बल्कि हर तो केवल बुढ़ापे के अकेलेपन से हैं। उनसे बात करने से मुझे पता चला कि उन सभी माओ के बच्चे अच्छी खासी जिंदगी जी रहे हैं, मगर अपने माँ-बाप की देखभाल करने का वक्त उनके पास नहीं है। इसलिए तो उन्हें लाकर इस वदाश्रम में छोड दिया है। यह बात मुझे बहुत अजीब लगा। आखिर क्यों माँ बाँप बुढ़ापे में बच्चों को बोज बन जाते है। आखिर को वृद्धाश्रमो की संख्या दिन भर दिन बढ़ती ही जा रही है। आखिर को वृद्धाश्रमो की संख्या दिन भर दिन बढ़ती ही जा रही है। वहाँ से वापस आने तक तो मैं खुश ही थी। मगर घर लौटकर आते ही मुझे यह चिंता सताने लगा कि आखिर मेरे भी बुढापा किसी वृदाश्रम में भी हो सकता है "मेरे भी बुढ़ापा किसी वृद्धाश्रम में बिताना पडेगा।" आखिर ऐसा क्यों होता है ? क्या हमारे परवरिश में कोई कमी रह जाती है। प्यार तो हम

अपने बच्चों से बहुत करते है। उनके बचपन की सब जरूरतों को भी हम पूरा करते है। उन्हें किसी चीज की कमी का एहसाज भी हम होने नहीं देते। फिर भी क्यों जब उनकी एहसान लोटाने का वक्त जब आता है वह सब भूल जाते हैं? आखिर इसका क्या कारण हो सकता है?

आजकल एकल परिवारों का जमाना आ गया है जिसमें केवल माँ बाप और बच्चें साथ में रहते है। नाना-नानी के साथ समय बिताने का मोका तो बच्चों को साल में एक दो बार ही मिलता है। नाना-नानी ही बच्चों के जीवन के सबसे प्यारा और महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। वह बच्चों के पहले गुरु, दोस्त और मार्गदर्शक होता है। उन लोग ही बच्चों को सहानुभूति और उदारता का मूल्य समझाता है। अगर हम ही अपने माँ-बाप को छोडकर बच्चों अपने बच्चों के साथ दूर रहें तो हमारे बच्चे भी ऐसे ही करेंगे ना। अगर हम से ही बच्चें सब कुछ सीखते है।

अगर हम अपने माँ- बाप की देखभाल करेंगे तो वह देखकर ही हमारे बच्चे बड़े होंगे। तब जाकर ही हमारे बुढ़ापे में बच्चे हमारा सहारा बनेंगे। जो काम हम ना करें उसकी उम्मीद हम अपने बच्चों से कैसे कर सकते है ? हर वृद्धाश्रम हम सबके लिए एक चेतावनी है हम अपने सारे स्वास्थ्य और धन अपने बच्चों पर लुटाते हैं। मगर अपने कमाई से कुछ पैसे अपने बुढ़ापे के लिए भी बचाकर रखन। क्या पता जिन्हें हम अपने बुढ़ापे का सहारा वह ही हमें आँसु देकर हमें किसी वृद्धाश्रम में छोडकर जाएँ….

****

"बस अपने बच्चों के साथ अच्छा और दयालु व्यवहार करें। वे न केवल दुनिया का भविष्य हैं, बल्कि वे ही हैं जो आपको एक घर(वृद्धाश्रमो) में बसा सकते हैं।"

डेनिस मिलर

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी बुढ़ापे और स्वास्थ्य से सम्बंधित मुख्य तथ्य

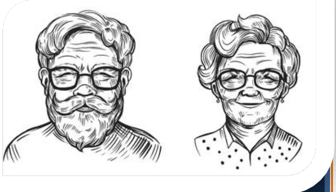

- **2050 में, 80% वृद्ध लोग निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रहेंगे।**
- **जनसंख्या वृद्धावस्था की गति पहले की तुलना में बहुत तेज़ है।**
- **2020 में, 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों की संख्या 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से अधिक थी।**
- **2015 और 2050 के बीच, दुनिया की 60 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या का अनुपात 12% से लगभग दोगुना होकर 22% हो जाएगा।**
- **सभी देशों के सामने यह सुनिश्चित करने की बड़ी चुनौतियाँ हैं कि उनकी स्वास्थ्य और सामाजिक प्रणालियाँ इस जनसांख्यिकीय बदलाव का अधिकतम लाभ उठाने के लिए तैयार हों।**

ऐसा अनुमानित है कि 2030 तक, दुनिया में 6 में से 1 व्यक्ति 60 वर्ष या उससे अधिक आयु का होगा। इस समय 60 वर्ष और उससे अधिक आयु की आबादी का हिस्सा 2020 के 1 अरब से बढ़कर 1.4 अरब हो जाएगा। 2050 तक, दुनिया में 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों की आबादी दोगुनी (2.1 अरब) हो जाएगी। 80 वर्ष या उससे अधिक आयु के लोगों की संख्या 2020 और 2050 के बीच तिगुनी होकर 426 मिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है।